



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section I

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 56]

नई दिल्ली, बुधवार, फरवरी 23, 2012/फाल्गुन 4, 1933

No. 56]

NEW DELHI, THURSDAY, FEBRUARY 23, 2012/PHALGUNA 4, 1933

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं सम्बद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 23 फरवरी, 2012

अंतिम जांच परिणाम

विषय : कोरिया गण. के मूल के या वहां से निर्यातित फेनोल के आयात के बारे में मध्यावधि समीक्षा जांच।

सं. 15/31/2010-डीजीएडी.—समय-समय पर यथासंशोधित सीमा-शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 (जिसे आगे अधिनियम कहा गया है) और सीमा-शुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं का अभिज्ञान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण तथा क्षति निर्धारण) नियमावली, 1995 (जिसे आगे पाटनरोधी नियमावली या नियमावली कहा गया है) को ध्यान में रखते हुए;

क. मामले की पृष्ठभूमि

समय-समय पर यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975. (जिसे आगे अधिनियम कहा गया है) और सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं का अभिज्ञान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण तथा क्षति निर्धारण) नियमावली, 1995 (जिसे आगे पाटनरोधी नियमावली या नियमावली कहा गया है) को ध्यान में रखते हुए निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिसे आगे प्राधिकारी कहा गया है) ने कोरिया गण. (जिसे आगे संबद्ध देश कहा गया है) के मूल के या वहां से निर्यातित फेनोल (जिसे आगे संबद्ध वस्तु कहा गया है) के आरोपित पाटन के बारे में 26 नवंबर, 2010 को मध्यावधि समीक्षा पाटनरोधी जांच शुरू की। कोरिया गण., अमरीका और ताइवान के मूल के या वहां से निर्यातित फेनोल के आयातों के खिलाफ 11 जनवरी, 2007 को मूल जांच शुरू की गई थी। प्राधिकारी के दिनांक 29 अगस्त 2007 के अंतिम जांच परिणाम संबंधी अधिसूचना के आधार पर 19 सितंबर, 2007 की सी.शु. अधिसूचना सं. 105/2007-सी.शु. के तहत तीनों देशों से फेनोल के आयातों पर अंतिम पाटनरोधी शुल्क लागू किया गया था। निर्दिष्ट प्राधिकारी ने 7 जनवरी, 2008 की अधिसूचना सं. 14/5/2006-डी जी ए डी के तहत अंतिम जांच परिणाम अधिसूचित किए थे और राजस्व

विभाग ने 3 मार्च, 2008 की अधिसूचना सं. 30/2008-सी.शु. के तहत उपर्युक्त देशों से संबद्ध वस्तु के आयातों पर निश्चयात्मक शुल्क लागू किया था ।

2. और यतः पाटनरोधी नियमावली के नियम 23 के अंतर्गत प्राधिकारी के लिए पाटनरोधी शुल्क को सतत रूप से लागू रखने की जरूरत की समय-समय पर समीक्षा करनी अपेक्षित होती है और यदि प्राधिकारी प्राप्त सकारात्मक सूचना के आधार पर इस बात से संतुष्ट हो कि ऐसे शुल्क को निरंतर लागू रखने का कोई औचित्य नहीं है तो प्राधिकारी उसे समाप्त करने के लिए केन्द्र सरकार को सिफारिश कर सकते हैं । विधिक उपबंधों के अनुसार, निर्दिष्ट प्राधिकारी को संबद्ध वस्तु के निर्यातकों में से एक निर्यातक अर्थात् मै. एल जी कैम. लि., कोरिया गण. से कोरिया गण. के मूल की या वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु पर लगाए गए पाटनरोधी शुल्क की मध्यावधि समीक्षा की जरूरत की पुष्टि करते हुए एक आवेदन प्राप्त हुआ और उन्होंने प्राधिकारी से पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने/उसमें संशोधन किए जाने का अनुरोध किया । उपर्युक्त निर्यातक और आयातक ने प्रमुख मापदंडों अर्थात् मूल कच्ची सामग्री की कीमत में वृद्धि, कोरिया गण. से भारत को संबद्ध वस्तु की निर्यात कीमत में वृद्धि और भारत में संबद्ध वस्तु की घरेलू कीमत में अत्यधिक वृद्धि एवं कोरिया गण. में संबद्ध वस्तु की घरेलू कीमत में भारी वृद्धि के कारण प्राधिकारी द्वारा लगाए गए पाटनरोधी शुल्क की समीक्षा किए जाने की जरूरत है । यह भी तर्क दिया गया है कि संबद्ध निर्यातक द्वारा कोरिया गण. से पाटन अब विद्यमान नहीं है और पाटन मार्जिन तथा विद्यमान परिणामी शुल्क में अधोगामी संशोधन की जरूरत है ।

3. प्रथम दृष्टया साक्ष्य के आधार पर परिस्थितियों में इस परिवर्तन पर प्राधिकारी ने मध्यावधि समीक्षा शुरू करने के लिए उचित विचार किया था । दिनांक 7.1.2008 की अधिसूचना सं. 14/5/2006-डी जी ए डी के तहत अधिसूचित अंतिम जांच परिणाम की समीक्षा करने का निर्णय लेने के बाद प्राधिकारी ने संबद्ध देश से आयातित संबद्ध वस्तु पर पाटनरोधी शुल्क को सतत रूप से लगाए जाने की जरूरत की समीक्षा करने के लिए पाटनरोधी नियमावली के नियम 23 के अनुसार 26.11. 2011 की जांच शुरुआत संबंधी अधिसूचना की सं. 15/31/2010 -डी जी ए डी के तहत जांच की शुरुआत की ।

ख. जांच में अपनाई गई प्रक्रिया

4. वर्तमान जांच में निम्नलिखित प्रक्रिया अपनाई गई है :

- i) प्राधिकारी को कोरिया गण. से फेनोल के आयातों पर लागू पाटनरोधी शुल्क की समीक्षा करने के लिए मै. एल जी कैम लि., कोरिया गण. से एक आवेदन प्राप्त हुआ ।
- ii) स्वयं को इस बात से संतुष्ट करने के बाद कि याचिकाकर्ता ने मध्यावधि समीक्षा की जरूरत की पुष्टि करते हुए पर्याप्त प्रथमदृष्टया सूचना प्रस्तुत की है । प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के नियम 23 के अंतर्गत 26/11/2010 की अधिसूचना सं. 15/31/2010 के तहत कोरिया गण. के मूल की

यावहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के आयातों पर लागू पाटनरोधी शुल्क की मध्यावधि समीक्षा जांच शुरू की । वर्तमान समीक्षा के दायरे में मूल जांच के सभी पहलू शामिल हैं ।

iii) नियम 6 (2) के अनुसार जांच की शुरुआत के बारे में नई दिल्ली स्थित कोरिया गण. सरकार के दूतावास को इस अनुरोध के साथ सूचित किया गया था कि वे अपने देश के सभी निर्यातकों/उत्पादकों को निर्धारित समय के भीतर निर्धारित प्रश्नावली का उत्तर देने की सलाह दें ।

iv) समीक्षा शुरू करने के बाद प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के नियम 6 (4) के अनुसार जांच शुरुआत संबंधी अधिसूचना के साथ निर्यातक प्रश्नावली संगत सूचना मांगने के लिए संबद्ध देश में उत्पादक/निर्यातक मै. पी. एंड बी कैमिकल्स इंक सहित संबद्ध वस्तु के सभी ज्ञात उत्पादकों और/अथवा निर्यातकों को भेजी ।

v) निर्यातक प्रश्नावली का उत्तर निम्नलिखित उत्पादकों और निर्यातकों ने दायर किया है :

- मै. एल जी कैम लि., कोरिया गण.
- मै. कुम्हो पी एंड बी कैमिकल्स कं. लि., कोरिया गण.
- मै. हुमेद कार्पोरेशन, कोरिया गण., मै. कुम्हो पी एंड बी कैमिकल्स कंपनी लि., कोरिया गण का व्यापारी निर्यातक, और
- मै. केमोयल कार्पोरेशन, कोरिया गण., मै. कुम्हो पी एंड बी कैमिकल्स कंपनी लि., कोरिया गण का व्यापारी/निर्यातक,

vi) पाटनरोधी नियमावली के नियम 6 (4) के अनुसार आवश्यक सूचना मांगने के लिए भारत में संबद्ध वस्तु के निम्नलिखित आयातकों, उपभोक्ताओं, औद्योगिक प्रयोक्ताओं को आयातक प्रश्नावलियां भेजी गई थीं :

- सी जे. शाह एंड कंपनी, मुंबई
- हरेश कुमार एंड कंपनी, मुंबई
- पी सी एल इंडस्ट्रीज नई दिल्ली
- कांतिलाल मनीलाल एंड कंपनी मुंबई
- सोनकमल इंटरप्राइजेज मुंबई
- खेतान ब्रदर्स मुंबई
- शुभम डाइज एंड कैमिकल लिमिटेड, दिल्ली
- एक्रोन इंटरप्राइजेज अहमदाबाद
- नइकानावेयर कैमिकल्स लिमिटेड, मुंबई
- पारस डाइज एंड कैमिकल्स नई दिल्ली

- टोरेट फार्मास्युटीकल्स लिमिटेड, गुजरात
- गूनाइटेड फॉस्फोरस लिमिटेड, मुंबई
- रेजिन्स एंड प्लास्टिक लि. मुंबई
- कैलाश पॉलीमर नई दिल्ली
- सेंट्रम मेटेलिक्स प्रा. लि., मुंबई
- वन्डर लेमिनेट्स प्रा. लि., पं. बंगाल,
- मेघदेव इंटरप्राइजेज अहमदाबाद
- सतगुरु इंटरनेशनल, नई दिल्ली
- हाई पॉलीमर लेब्स लि., नई दिल्ली
- रेनबो कलर्स एंड कौमेकल, गुजरात
- ब्लैच मार्केटिंग प्रा. लि., गुजरात
- क्रमेन इंटरनेशनल (प्रा.) लिमिटेड, तमिलनाडु
- कृष्णा एंटीयोक्सीडेंट्स प्रा. लिमिटेड, मुंबई
- एनजीपी इंडस्ट्रीज लि., नई दिल्ली
- फार्मासन फार्मास्युटीकल गुजरात लिमिटेड, बड़ौदा
- इंडिया ग्लाइकोल्स लि., नई दिल्ली
- सिंह प्लास्टिसाइजर्स एंड रेजिन्स (इंडिया) प्रा. लि., नई दिल्ली
- नेशनल प्लाइवुड इंडस्ट्रीज लि., पश्चिम बंगाल

vii) उपर्युक्त में से किसी ने भी निर्धारित प्रपत्र में और ढंग से अयातक प्रश्नावली का उत्तर दायर नहीं किया। तथापि, निम्नलिखित हितबद्ध पक्षकारों से उत्तर प्राप्त हुए थे:

- मैरीनो पैनल प्रोडक्ट्स लि. ;
- ग्रीन प्लाई इंडस्ट्रीज लि.,
- एग्जिम- कार्प इंडिया प्रा. लि.
- ए आर सी एल आर्गेनिक्स लि.
- मै. अग्रवाल कैमिकल्स,

viii) यह जांच 1 जूलै, 2009 से 30 जून, 2010 तक की जांच अवधि के लिए की गई थी। तथापि, क्षति जांच वर्ष 2007-08 से जांच अवधि की समाप्ति तक की अवधि और जांच अवधि के लिए की गई थी।

ix) वाणिज्यिक आसूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय (डी जी सी आई एंड एस), कोलकाता से जांच अवधि तथा पूर्ववर्ती 3 वर्षों के लिए भी भारत में संबद्ध वस्तु के आयातों का ब्यौरा उपलब्ध कराने का अनुरोध किया गया था । डी जी सी आई एंड एस से सूचना प्राप्त हो गई थी ।

x) उपर्युक्त नियम 6 (3) के अनुसार प्राधिकारी ने आवेदन का अगोपनीय रूपांतरण ज्ञात उत्पादकों/निर्यातकों तथा संबद्ध देश के दूतावास को भी उपलब्ध कराई । अगोपनीय आवेदन की प्रति अनुरोध किए जाने पर अन्य हितबद्ध पक्षकारों को भी उपलब्ध कराई गई थी ।

xi) जांच शुरुआत संबंधी अधिसूचना का उत्तर निम्नलिखित से प्राप्त हुआ था :

- एल जी कैम लि., कोरिया गण. (उत्पादक/निर्यातक)
- मै. कुम्हो पी एंड बी कैमिकल्स कं. लि., कोरिया गण. (उत्पादक)
- मै. हुमेद कार्पोरेशन, कोरिया गण., (निर्यातक)
- मै. केभोयल कार्पोरेशन, कोरिया गण., (निर्यातक)
- मै. मेरीनो पैनल प्रोडक्ट्स लि. (आयातक)
- मै. ग्रीन प्लाई इंड लि. (आयातक)
- मै. एग्जिम-कार्प इंडिया प्रा.लि. (आयातक)
- मै. ए आर सी एल आर्गेनिक्स लि (आयातक)
- मै. अग्रवाल कैमिकल्स (आयातक)

xii) प्राधिकारी ने नियम 6 (6) के अनुसार संगत सूचना मौखिक रूप से प्रस्तुत करने के लिए हितबद्ध पक्षकारों को अवसर प्रदान करने हेतु 8 मार्च, 2011 को मौखिक सुनवाई आयोजित की । जो पक्षकार मौखिक सुनवाई में उपस्थित हुए थे उनसे मौखिक रूप से प्रस्तुत सूचना के लिखित अनुरोध दायर करने के लिए कहा गया था । हितबद्ध पक्षकारों को अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत विचारों/सूचना पर उत्तर दायर करने की अनुमति दी गई थी । प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों से प्राप्त अनुरोधों पर समुचित विचार किया है ।

xiii) जांच के दौरान प्राधिकारी ने प्रस्तुत सूचना की सत्यता और यथातथ्यता के बारे में स्वयं को संतुष्ट किया ।

xiv) प्राधिकारी ने संगत समझी गई सीमा और आवश्यकता तक घरेलू उद्योग और उत्पादकों/निर्यातकों का मौके पर सत्यापन किया । घरेलू उद्योग से क्षति के बारे में अतिरिक्त/पूरक ब्यौरे मांगे गए थे जो प्राप्त हो गए थे ।

xv) प्राधिकारी ने नियमावली के नियम 6 (7) के अनुसार, हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य का अगोपनीय रूपांतरण प्राधिकारी द्वारा रखी गई सार्वजनिक फाइल के जरिए उपलब्ध कराया जिसे हितबद्ध पक्षकारों के निरीक्षण हेतु खुला रखा ।

xvi) सामान्यतः स्वीकृत लेखा सिद्धांतों (जी ए ए पी) के आधार पर भारत में संबद्ध वस्तु की उत्पादन लागत के अनुसार क्षति कीमत के निर्धारण हेतु लागत जांच की गई थी ताकि यह पता लगाया जा सके कि क्या पाटन मार्जिन से कमतर पाटनरोधी शुल्क घरेलू उद्योग को हुई क्षति समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगा और घरेलू उद्योग को शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में कोई क्षति नहीं होगी ।

xvii) जहां किसी हितबद्ध पक्षकार ने वर्तमान जांच के दौरान आवश्यक सूचना जुटाने से मना किया है अथवा उसे अन्यथा उपलब्ध नहीं कराया है अथवा जांच में अत्यधिक बाधा डाली है वहां प्राधिकारी ने उपलब्ध तथ्यों के आधार पर अपना विश्लेषण दर्ज किया है ।

xviii) हितबद्ध पक्षकारों द्वारा गोपनीय आधार पर प्रदत्त सूचना की जांच गोपनीयता के दावे की पर्याप्तता के बारे में की गई थी । संतुष्ट होने के उपरांत प्राधिकारी ने अपेक्षानुसार गोपनीयता प्रदान की है और ऐसी सूचना गोपनीय मानी गई है जिसका प्रकटन अन्य हितबद्ध पक्षकारों को नहीं किया गया है । गोपनीय आधार पर सूचना प्रदाता पक्षकारों को यह निर्देश दिया गया था कि वे गोपनीय आधार पर दायर सूचना का पर्याप्त अगोपनीय रूपांतरण उपलब्ध कराएं ।

xix) उपर्युक्त नियमावली के नियम 16 के अनुसार इन जांच परिणामों के लिए विचारित आवश्यक तथ्यों/आधार का प्रकटन ज्ञात हितबद्ध पक्षकारों को किया गया था और उस पर प्राप्त टिप्पणियों पर अंतिम जांच परिणाम में विचार किया गया है । निम्नलिखित हितबद्ध पक्षकारों ने प्रकटन विवरण का उत्तर दिया है और उनके अनुरोधों पर अंतिम जांच परिणाम के उचित शीर्षों में विचार किया गया है :-

1. मै. मैरीनो पैनल प्रोडक्ट्स लि. (आयातक)
2. मै. ग्रीन प्लाई इंड लि. (आयातक)
3. मै. एग्जिम-कार्प इंडिया प्रा.लि. (आयातक)
4. मै. ए आर सी एल आर्गेनिक्स लि (आयातक)
5. मै. अग्रवाल कैमिकल्स
6. फेडरेशन ऑफ इंडियन प्लाइवुड एंड पैनल इंडस्ट्री
7. एच ओ सी एल, घरेलू उद्योग
8. एल जी कैम लि., कोरिया गण.
9. कुम्हो पेट्रोकेमिकल्स, कोरिया गण.

(XX) **** यह चिन्ह इस अंतिम जांच परिणाम में हितबद्ध पक्षकारों द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत सूचना का द्योतक है और प्राधिकारी ने नियमानुसार उसे गोपनीय ही माना है ।

ग. विचाराधीन उत्पाद तथा समान वस्तु

5. पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(घ) के अंतर्गत सामान्य वस्तु का तात्पर्य किसी ऐसी वस्तु से है जो विचाराधीन उत्पाद से हर प्रकार से समानरूप और समान है अथवा ऐसी किसी वस्तु के अभाव में ऐसी अन्य वस्तु से है जिसकी विशेषताएं जांचाधीन वस्तु से अत्यधिक मिलती-जुलती हैं ।

ग. 1 घरेलू उद्योग के विचार

6. मूल जांच और वर्तमान मध्यावधि समीक्षा जांच में शामिल उत्पाद फेनोल है । वर्तमान मध्यावधि समीक्षा में विचाराधीन उत्पाद वही है जैसा कि निर्दिष्ट प्राधिकारी ने पूर्ववर्ती जांचों में माना है ।

ग.2 आयातकों, उपभोक्ताओं, निर्यातकों तथा अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार

7. किसी भी आयातक, उपभोक्ता, निर्यातक तथा अन्य हितबद्ध पक्षकार ने विचाराधीन उत्पाद तथा समान वस्तु के बारे में कोई टिप्पणी या अनुरोध प्रस्तुत नहीं किया है ।

प्राधिकारी द्वारा जांच

8. प्राधिकारी नोट करते हैं मूल जांच की भांति और वर्तमान समीक्षा आवेदन में भी विचाराधीन उत्पाद फेनोल है । फेनोल एक मूलभूत कार्बनिक रसायन है जो सामान्यतः सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के अध्याय 29 के अंतर्गत वर्गीकृत है तथापि आयात अध्याय 27 के अंतर्गत भी सूचित किए जाते हैं। यह उत्पाद सीमाशुल्क टैरिफ शीर्ष सं. 2907.11 तथा 2707.60 के अंतर्गत वर्गीकृत है । तथापि, सी.शु. वर्गीकरण केवल सांकेतिक है और वर्तमान जांच के दायरे पर किसी भी रूप में बाध्यकारी नहीं है । निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा की गई मूल जांच के अनुसार उत्पाद निम्नानुसार परिभाषित किया गया है :

“फेनोल एक मूलभूत कार्बनिक रसायन है जो सामान्यतः सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के अध्याय 29 के अंतर्गत वर्गीकृत है । यह उत्पाद सी. शु. टैरिफ शीर्ष सं. 2907.11 के अंतर्गत वर्गीकरणीय है । उत्पाद का विपणन दो ग्रेडों क्रिस्टिलिंग तथा हाइड्रेटिड में किया जाता है । दोनों ग्रेड फेनोल के प्रवाह की विशेषताओं के आधार पर भिन्न-भिन्न हैं । उत्पाद का विपणन दो रूपों-खुले एवं डिब्बा बंद रूप में किया जाता है । खुली बिक्री सामान्यतः बल्क में होती है जबकि डिब्बा बंद परेषण अत्यंत छोटे कंटेनर भारों में किए जा सकते हैं । फेनोल का उपयोग

फार्मेलिडहाइड रेजिनो, लेमिनेटो, प्लाइवुड, पार्टीकल बोर्डो, विस्फेनोल-ए अल्कायल फेनोल, भेषजो, डी फिनाइल ऑक्सीइड आदि में किया जाता है ।”

9. विचाराधीन उत्पाद के क्षेत्र के बारे में किसी पक्षकार ने कोई टिप्पणी नहीं की है । वर्तमान जांच मध्यावधि समीक्षा जांच है । अतः वर्तमान जांच में विचाराधीन उत्पाद का क्षेत्र मूल जांच के समान ही रहता है । प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित और संबद्ध देश से आयातित फेनोल में कोई अंतर नहीं है । घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित और घरेलू बाजार में बेचा गया फेनोल और संबद्ध देशों से आयातित फेनोल भौतिक एवं रासायनिक विशेषताओं, वस्तु की विनिर्माण प्रक्रिया एवं प्रौद्योगिकी (जिसे विश्व भर के अधिकांश उत्पादक अपनाते हैं), कार्य एवं उपयोग, उत्पाद विनिर्देशन, कीमत, वितरण एवं विपणन तथा टैरिफ वर्गीकरण के संबंध में तुलनीय है । ये दोनों तकनीकी और वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापनीय हैं । उपभोक्ताओं ने दोनों का अदल-बदल कर उपयोग किया है । याचिकाकर्ताओं द्वारा उत्पादित फेनोल को संबद्ध देशों से आयातित संबद्ध वस्तु के समान वस्तु माना जाता है ।

घ. घरेलू उद्योग का आधार

10. घरेलू उद्योग के आधार के बारे में नियम 2(ख) में निम्नानुसार उल्लेख है :

“घरेलू उद्योग” का तात्पर्य ऐसे समग्र घरेलू उत्पादकों से है जो समान वस्तु के विनिर्माण और उससे जुड़े किसी कार्यकलाप में संलग्न हैं अथवा उन उत्पादकों से है जिनका उक्त वस्तु का सामूहिक उत्पादन उक्त वस्तु के कुल घरेलू उत्पादन का एक बड़ा हिस्सा बनता है, परंतु जब ऐसे उत्पादक आरोपित पाटित वस्तु के निर्यातकों या आयातकों से संबंधित होते हैं या वे स्वयं उसके आयातक होते हैं तो ऐसे मामले में ऐसे उत्पादकों को घरेलू उद्योग का भाग नहीं माना जाएगा ।

11. वर्तमान मध्यावधि समीक्षा जांच कोरिया गण. के निर्यातकों में से एक निर्यातक अर्थात् मै. एल जी कैम द्वारा दायर आवेदन के आधार पर शुरू की गई है । मध्यावधि समीक्षा जांच की शुरुआत का उत्तर भारत में एक घरेलू उत्पादक अर्थात् मै. एच ओ सी एल से प्राप्त हुआ है । भारत में फेनोल के एक अन्य उत्पादक मै. एस आई ग्रुप ने मै. एच ओ सी एल के अनुरोध का समर्थन किया है । मै. एच ओ सी एल ने घरेलू उद्योग के लिए आवेदन प्रपत्र में और ढंग से लागत एवं क्षति सूचना प्रस्तुत की । एच ओ सी एल द्वारा उपलब्ध की गई सूचना के अनुसार उसका उत्पादन भारत में कुल घरेलू उत्पादन का 52.10% बनता है । घरेलू उद्योग के आधार के बारे में किसी हितबद्ध पक्षकार ने कोई मुद्दा नहीं उठाया है । अतः निर्दिष्ट प्राधिकारी ने मै. एच ओ सी एल को पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(ख) के अनुसार, घरेलू उद्योग माना है ।

अन्य मुद्दे**घरेलू उद्योग के विचार**

12. घरेलू उद्योग द्वारा व्यक्त विचार निम्नानुसार हैं:

- (क) मध्यावधि समीक्षा का क्षेत्र निर्णायक समीक्षा के क्षेत्र से सर्वथा भिन्न है ।
- (ख) कोरिया गण, से संबद्ध वस्तु के आयातों पर पाटनरोधी शुल्क के प्रस्तावित समय पूर्व समापन का कोई औचित्य नहीं है । याचिकाकर्ता ने शुल्क समाप्त किए जाने की जरूरत की पुष्टि करने के लिए कोई सूचना प्रदान नहीं की है । एल जी कैम के अनुरोध अपुष्टिकृत हैं और उनसे शुल्क की किसी वापसी में कोई परिवर्तन औचित्यपूर्ण नहीं बनता है, पाटनरोधी शुल्क के समय पूर्व समापन की बात ही छोड़ दीजिए ।
- (ग) किसी मध्यावधि समीक्षा में संदर्भाधीन निर्यातक द्वारा "कोई पाटन न किया जाना" शुल्क में संशोधन के लिए पर्याप्त नहीं है ।
- (घ) इस बात की जांच करने के लिए कि क्या पाटनरोधी शुल्क में संशोधन या उसे समाप्त किए जाने से निर्यातक द्वारा उत्पाद का पाटन किए जाने की संभावना है, निर्दिष्ट प्राधिकारी के लिए इस बात की जांच करना अपेक्षित होता है कि क्या निर्यातक अन्य देशों में वस्तु का पाटन कर रहा है ।
- (ङ) इस बात को सिद्ध करने का भार याचिकाकर्ता पर होता है न कि घरेलू उद्योग पर कि क्या लागू पाटनरोधी शुल्क में संशोधन या उसके समापन की जरूरत है ।
- (च) याचिकाकर्ता ने निर्दिष्ट प्राधिकारी के समक्ष दायर विभिन्न सूचनाओं के बारे में अत्यधिक गोपनीयता का दावा किया है ।

आवेदक तथा अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार (अन्य निर्यातक/आयातक/अंतःप्रयोक्ता)

13. उन्होंने अपने विचार निम्नानुसार व्यक्त किए हैं:

- (क) मूल जांच की तुलना में अपरिष्कृत तेल की विनिमय दर तथा कीमतों में परिवर्तन होने के कारण सामान्य मूल्य तथा मूल कच्ची सामग्री (नेफ्था) की कीमत में वृद्धि हुई है ।
- (ख) फेनोल की मांग और पूर्ति में असंतुलन के कारण फेनोल की निर्यात कीमत में वृद्धि कच्ची सामग्री की कीमत में हुई वृद्धि से अधिक हुई है ।
- (ग) मूल जांच की तुलना में भारत में उत्पाद शुल्क प्रतिशत की कमी जिससे पट्टा तथा क्षति मार्जिन पर उसका प्रभाव कम हुआ है ।

- (घ) एल जी कैम लि. की निर्यात कीमत घरेलू बाजार में कीमत से काफी अधिक है ।
- (ङ) मूल जांच अवधि की तुलना में घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत में काफी वृद्धि हुई है ।
- (च) मांग और पूर्ति के बीच अंतर को पाटने के लिए आयात आवश्यक हैं ।
- (छ) घरेलू उद्योग भारी मुनाफा कमा रहा है और उस पर कोरिया गण से हुए आयातों का प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ा है ।
- (ज) अन्य स्रोतों से कोई औपचारिक अनुरोध न मिलने पर भी समीक्षा में केवल एक देश अर्थात् की बजाए वे सभी देश शामिल होने चाहिए जिनसे भारत में आयातित फेनोल पर पाटनरोधी शुल्क लागू है। परिस्थितियों में हुए भारी परिवर्तन को ध्यान में रखते हुए डी जी ए डी के लिए यह जरूरी हो गया है कि वह संगत संविधि के अंतर्गत अपने दायित्वों के अनुरूप शक्तियों का प्रयोग करे ।
- (झ) पाटन एवं क्षति दोनों के लिए समीक्षा में समूची मध्यवर्ती अवधि अर्थात् 1 जुलाई, 2007 से 30 जून, 2010 तक की अवधि शामिल होनी चाहिए ।
- (ञ) शुल्क के स्वरूप का तुरंत पुनःमूल्यांकन किए जाने की जरूरत है क्योंकि शुल्क की मौजूदा निर्धारित विशिष्ट दर विचाराधीन उत्पाद के लिए किसी भी रूप में उचित नहीं है ।
- (ट) पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने से सार्वजनिक हित का उल्लंघन होता है । फेनोल के उपयोग से तैयार उत्पादों के आयात में भारी वृद्धि हुई है, प्रयोक्ता उद्योग तथा उपभोक्ताओं के हित पर भी विचार करना चाहिए ।
- (ठ) मांग-पूर्ति में भारी अंतर है । घरेलू उद्योग को बाजार में एकाधिकार की स्थिति प्राप्त है । लेमिनेट, प्लाईवुड, पार्टीकल बोर्ड के प्रयोक्ता लघु व्यापारी हैं और इसलिए वे अंतिम उत्पाद पाटनरोधी शुल्क लगाने के लिए आवेदन दायर नहीं कर सकते । पाटनरोधी उपाय समाप्त किए जाने की स्थिति में लघु उद्योग समाप्त हो जाएंगे ।
- (ड) घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत आंकड़ों को अत्यधिक गोपनीयता नहीं दी जाएगी । ऐसे सभी निर्धारणों में, जहां शुल्क की सिफारिश परिवर्ती आधार पर की गई है, सामान्य मूल्य का प्रकटन किया गया है और अधिसूचित किया गया है, वैसा ही वर्तमान मामले में किया जाना चाहिए, खासकर तब जब सामान्य मूल्य परिकलित सामान्य मूल्य हो जिसके आधार पर संख्या का प्रकटन किए बिना उसी जांच परिणाम में पूर्णतः चर्चा की गई हो ।
- (ढ) शुल्क की सिफारिश करते समय डी जी ए डी को आम जनता के हितों को ध्यान में रखना चाहिए ।

- (ण) परिकलित सामान्य मूल्य कुमेन से नहीं होना चाहिए जो एक मध्यवर्तीय उत्पाद है परंतु इसे बेंजीन तथा प्रोपीलीन से होना चाहिए ।
- (त) क्षति की जांच लागत आधार पर फेनोल को कुमेन के अंतरण की लागत पर विचार करते हुए किया जाना चाहिए । यदि कार्यप्रणाली में परिवर्तन होता है तो प्राधिकारी को टिप्पणियों के लिए अवसर प्रदान करना चाहिए ।
- (थ) क्षति रहित कीमत की गणना नवीनतम संशोधन के अनुसार की जानी चाहिए । कुमेन की बाजार कीमत व कि फैक्टरी में उसकी कीमत की जरूरत होती है जो मूल सीमाशुल्क जोड़ने के बाद बनती है ।

क्षति रहित कीमत तथा क्षति मार्जिन पर टिप्पणी

घरेलू उद्योग की टिप्पणी

14. घरेलू उद्योग ने निम्नानुसार अनुरोध किया है :
- क. मध्यावधि समीक्षा में क्षति रहित कीमत की तुलना निवल बिक्री प्राप्ति से करना पूर्णतः अप्रासंगिक है ।
- ख. क्षति रहित कीमत का निर्धारण सकल अचल परिसंपत्तियों वह भी वर्तमान बाजार मूल्य पर विचार करते हुए करना अपेक्षित होता है । घरेलू उद्योग के मूल संयंत्र का पहले ही पूर्ण मूल्यहास किया जा चुका है । यह आशा नहीं की जा सकती कि घरेलू उद्योग को "कोई लाभ नहीं कमाना" चाहिए क्योंकि निवेश खाता बहियों में पूर्णतः मूल्य हासित हैं । वस्तुतः घरेलू उद्योग इन निवेशों के वर्तमान बाजार मूल्य के आधार पर लाभ का पात्र है ।
- ग. वर्तमान मामला निवल अचल परिसंपत्तियों के आधार पर क्षति रहित कीमत के निर्धारण की कार्य प्रणाली की समीक्षा करने के लिए एक सर्वथा उचित मामला है । घरेलू उद्योग का प्राधिकारी से अनुरोध है कि वे कृपया खाता बहियों का सत्यापन करें जिनसे यह पता चलेगा कि फेनोल संयंत्र में मूल निवेशों पर पहले से ही मूल्यहास प्रदान किया गया है ।
- घ. इस अवधि में कुमेन के आयात कोई नहीं हो सकता है अथवा अत्यंत कम हो सके हैं जो फेनोल की वास्तविक कच्ची सामग्री है । यदि प्राधिकारी कुमेन की कीमत का परिकलन उचित समझते हैं तो घरेलू उद्योग का अनुरोध है कि कुमेन की बाजार कीमत के निर्धारण हेतु निम्नलिखित व्यय को जोड़ने की जरूरत है । इस संबंध में यह उल्लेखनीय है कि कोई भी व्यापार कंपनी ये व्यय किए बिना समग्री की खरीद नहीं कर सकते ।

- समुद्री भाड़ा (यदि कीमत एफ ओ बी है)
- समुद्री बीमा (यदि कीमत एफ ओ बी है)
- सीमाशुल्क
- सीमाशुल्क पर उप कर
- पत्तन व्यय
- अंतिम हैंडलिंग प्रभार
- बैंक कमीशन
- कमीशन
- पत्तन से संयंत्र तक अंतरदेशीय भाड़ा
- भंडारण व्यय
- कार्यशील पूंजी निवेश

ड वस्तुतः निर्दिष्ट प्राधिकारी ने सकल अचल परिसंपत्ति को विगत में लाभ के निर्धारण का आधार माना था । यह निर्णय उचित विचार के बाद लिया गया था जिससे कुछ समय तक लागू रखा गया और तत्पश्चात ऐसे कारणों से संशोधित कर दिया गया जो सार्वजनिक रूप से ज्ञात नहीं हैं ।

च. क्षति रहित कीमत में निम्नलिखित व्यय शामिल होने चाहिए ।

- i. देश के भीतर फैक्टरी से विस्तारित भांडागार तक भारतीय भाड़ा
- ii. अंतिम अवधि की मात्रा हेतु छूट- वस्तुस्थिति यह है कि यह व्यय "छूट है" जिसका तात्पर्य यह नहीं होना चाहिए कि उसे क्षति रहित कीमत के निर्धारण हेतु अलग रखा जाए । हालांकि "बीजक गत" छूट की कटौती करना उचित हो सकता है क्योंकि ये बिक्री के समय प्रदत्त छूटें हैं तथापि, "बीजक के बाहर" छूट बिक्री निहितियों के मामले में प्रदान की जाती हैं और ये अंतिम अवधि छूटें होती हैं और इनकी आयात प्रतिस्पर्धा से कोई प्रासंगिकता नहीं होती है और इसीलिए इनकी कटौती नहीं की जानी चाहिए ।
- iii. नकद छूट

अन्य हितबद्ध पक्षकारों (आयातकों तथा अंतिम प्रयोक्ताओं) के विचार

15. अन्य हितबद्ध पक्षकारों ने अनुरोध किया है कि क्षति रहित कीमत की गणना 1 मार्च, 2011 की सी.शु. अधिसूचना सं. 15/2011-सी.शु. (एन टी) के अनुसार की जानी चाहिए ।

प्राधिकारी द्वारा जांच

16. निर्दिष्ट प्राधिकारी का प्रस्ताव निर्यातकों, घरेलू उद्योग, आयातकों तथा अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा उठाए गए मुद्दों पर अंतिम जांच परिणाम में विचार करने का है । प्राधिकारी नोट करते हैं कि क्षति रहित कीमत का निर्धारण और कमतर शुल्क नियम को लागू करना पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-III द्वारा शासित होता है । प्राधिकारी ने क्षतिरहित कीमत की गणना घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत सूचना के आधार पर और पाटनरोधी नियमावली के अनुसार तथा प्राधिकारी की सुसंगत प्रक्रिया के अनुसार की है । क्षतिरहित कीमत की गणना का ब्यौरा प्रकटन विवरण के अनुबंध-IV में दिया गया है ।

प्रकटन विवरण के बाद हितबद्ध पक्षकारों के अनुरोध

घरेलू उद्योग के अनुरोध

17. घरेलू उद्योग ने प्रकटन विवरण पर निम्नलिखित अनुरोध किए हैं :-

- (क) प्रकटन विवरण पाटन की संभावना से संबंधित नहीं है । समीक्षा अवधि के दौरान कोई पाटन न होने का मात्र दावा मध्यावधि समीक्षा में अपर्याप्त है ।
- (ख) - प्रतिवादी निर्यातकों ने पाटन की संभावना का निर्धारण करने के लिए निर्दिष्ट प्राधिकारी को कोई सामग्री प्रदान नहीं की है ।
- (ग) तीसरे देशों में निर्यातकों के निर्यातों पर विचार करते हुए निर्दिष्ट प्राधिकारी ने पाटन की संभावना निर्धारित नहीं की है ।
- (घ) किसी प्रतिवादी निर्यातक/उत्पादक ने तीसरे देशों को हुए सौदेवार निर्यातों की सूचना नहीं दी है ।
- (ङ) निर्दिष्ट प्राधिकारी को यह निष्कर्ष निकालने के लिए हाल की अवधि तक के निष्पादन पर विचार करना चाहिए कि जांच अवधि के दौरान विद्यमान स्थिति स्थायी स्वरूप की थी ।

(च) निर्धारित क्षति मार्जिन में (i) क्षति रहित कीमत के निर्धारण, (ii) आयात कीमत और घरेलू कीमत के लक्ष्य/वांछित कीमत के बीच उचित तुलना के बारे में घरेलू उद्योग के अनुरोधों की अनदेखी की गई है।

(छ) जांच अवधि के लिए प्राधिकारी द्वारा निर्धारित क्षति रहित कीमत और कच्ची सामग्री की कीमत में बाढ़ में हुई वृद्धि पर विचार करते हुए घरेलू उद्योग की इस समय क्षति रहित कीमत आयातों की पहुंच कीमत से काफी कम है।

(ज) घरेलू उद्योग संभावना के बारे में निर्यातकों के तर्क और प्राधिकारी के अभिमत का खंडन करता है। क्षति का खतरा क्षति की संभावना से भिन्न होता है।

(झ) निर्दिष्ट प्राधिकारी को यह निष्कर्ष निकालने के लिए हाल की अवधि तक के निष्पादन पर विचार करना चाहिए कि जांच अवधि के दौरान विद्यमान स्थिति स्थायी स्वरूप की थी। जांच अवधि के दौरान निष्पादन में हुआ मात्र सुधार संभावना के बारे में निष्कर्ष निकालने के लिए सर्वथा अपर्याप्त है।

(ट) प्रकटन विवरण से यह स्पष्ट होता है कि उत्पादकों ने इस बारे में प्राधिकारी को पूर्ण सूचना नहीं दी है और तब भी पाटन मार्जिन निर्धारित किया गया है।

(ठ) मध्यावधि समीक्षा जांच में क्षति रहित कीमत और निवल बिक्री प्राप्ति के बीच अंतर महत्वहीन होता है।

(ड) भारत में उत्पादन और खपत की तुलना में निर्यातक द्वारा किए गए निर्यातों की मात्रा नगण्य है।

अन्य हितबद्ध पक्षकारों (निर्यातकों/उत्पादकों/आयातकों/प्रयोक्ताओं) के अनुरोध

18. प्रकटन विवरण पर अन्य हितबद्ध पक्षकारों के अनुरोध निम्नानुसार हैं :-

(क) डी जी ए डी ने 9 फरवरी, 2012 को अमरीका तथा ताइवान से आयातित संबद्ध वस्तु पर निष्पादित मध्यावधि समीक्षा में पाटनरोधी शुल्क समाप्त करने की पहले ही सिफारिश की है। दोनों मध्यावधि समीक्षा जांचों में समीक्षा की अवधि अभिभावी है। अतः यह निष्कर्ष निकालना उचित हो सकता है कि घरेलू उद्योग का निष्पादन एक समान होगा। चूंकि डी जी ए डी ने हाल ही में यह माना है कि घरेलू उद्योग को अब काकई क्षति नहीं हो रही है, इसलिए वर्तमान समीक्षा जांच में भी पाटनरोधी शुल्क जारी रखने की संस्तुति करना तर्कसम्मत नहीं है।

(ख) इसके अलावा, डी जी ए डी से अनुरोध है कि वह क्षति अवधि तथा जांच अवधि, दोनों के लिए अम.डा. तथा भारतीय रूपए, दोनों में सामान्य मूल्य तथा वास्तविक पाटन मार्जिन का प्रकटन करें।

(ग) जहां तक क्षति के निर्धारण का संबंध है, हम डी जी ए डी के जांच परिणाम को स्वीकार करते हैं और उनसे अंतिम जांच परिणाम में इसकी पुष्टि करने का अनुरोध करते हैं ।

(घ) हम कारणात्मक संबंध के विश्लेषण के बारे में डी जी ए डी के जांच परिणाम से सहमत हैं और उनसे अंतिम जांच परिणाम में इसकी पुष्टि करने का अनुरोध करते हैं ।

(ङ) हम डी जी ए डी के इस निर्धारण से सहमत हैं कि घरेलू उद्योग को क्षति की पुनर्संवृति होने की कोई संभावना नहीं है और उनसे अंतिम जांच परिणाम में इसकी पुष्टि करने का अनुरोध करते हैं ।

(च) घरेलू उद्योग को क्षति की मौजूदगी और क्षति होने की संभावना के अभाव में हम डी जी ए डी से फेनोल पर लगाए गए पाटनरोधी शुल्क समाप्त करने की सिफारिश करने का अनुरोध करते हैं ।

(छ) वर्तमान मध्यावधि समीक्षा की जांच अवधि के बाद कोरिया गण. से निर्यातित कीमत ताइवान से निर्यात कीमत से काफी अधिक है । ताइवान से निर्यातों के संबंध में निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा की गई मध्यावधि जांच की जांच अवधि वर्तमान मध्यावधि समीक्षा की जांच अवधि के समान है । यदि निर्दिष्ट प्राधिकारी ने यह निष्कर्ष निकाला है कि ताइवान से निर्यातों के कारण घरेलू उद्योग को क्षति होने की संभावना नहीं है तो यही निष्कर्ष वर्तमान मध्यावधि समीक्षा में निकाला जाना चाहिए ।

(ज) फेनोल के अंतर्राष्ट्रीय बाजार में कीमत में वृद्धि मुख्यतः आपूर्तियों में अंतर के कारण हुई है न कि यह आकस्मिक है । मांग में वृद्धि से नई क्षमताएं असंगत हो जाती हैं और मध्यावधि में प्रवृत्ति बदलने की संभावना नहीं होती है । भारती अयातों का हिस्सा वैश्विक उत्पादन का 1 प्रतिशत है । अन्य तीसरे देशों से तुलना करने पर भारत में कीमत की प्रवृत्ति हमेशा वैश्विक परिदृश्य में भारतीय बाजार का कम महत्व प्रदर्शित करेगी ।

प्राधिकारी द्वारा जांच

19. प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमों के संगत उपबंधों के अनुसार हितबद्ध पक्षकारों के अनुरोधों की जांच की है । जहां तक घरेलू उद्योग के प्रकटन विवरण के पश्चात अनुरोध का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि इन पर उचित पैराग्राफों में इस अंतिम जांच परिणाम में विचार किया गया है । प्राधिकारी ने समस्त संगत मापदंडों के आधार पर घरेलू उद्योग को क्षति की संभावना की जांच भी की है । प्राधिकारी नोट करते हैं कि सहयोगी निर्यातकों ने तीसरे देशों को हुए निर्यातों को सौदेवार ब्योरे प्रदान किए थे । इसके अलावा, प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग को क्षति की संभावना की जांच करने के लिए जांच अवधि के एक वर्ष बाद के लिए निर्यातकों से संगत सूचना प्राप्त की है । प्राधिकारी द्वारा इस अंतिम जांच परिणाम संबंधी अधिसूचना के संगत पैराग्राफों में क्षति की संभावना की विस्तार से उचित जांच की गई है । इसके अलावा प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति जांच अवधि तथा जांचोत्तर अवधि, दोनों में लगातार क्षतिरहित कीमत से अधिक पाई गई है । जहां तक आयातकों, प्रयोक्ताओं और निर्यातकों के विचारों का संबंध है, यह नोट किया जाता है कि पाटनरोधी शुल्क के अधीन देशों द्वारा सब वस्तु के आयातों का उल्लेख क्षति निर्धारण में किया गया है ।

च. पाटन का निर्धारण-कार्यप्रणाली एवं मापदंड

पाटन मार्जिन

घरेलू उद्योग के विचार

20. पाटन मार्जिन के बारे में घरेलू उद्योग ने निम्नलिखित अनुरोध किए हैं :-

क. उत्पाद का निर्यात पाटित कीमतों पर जारी है ।

ख. समीक्षा जांच का समूचा प्रयोजन यह देखना नहीं था कि क्या पाटनरोधी शुल्क को लगाने की जरूरत है । अपितु यह देखना था कि शुल्क को इस प्रकार जारी न रखे जाने पर पाटन में वृद्धि होगी और घरेलू उद्योग को क्षति होगी ।

ग. किसी मध्यावधि समीक्षा जांच में निर्यातक के लिए यह सिद्ध करना अपर्याप्त होता है कि वर्तमान समीक्षा अवधि में उत्पाद का पाटन नहीं किया जा रहा है । निर्यातक के लिए यह सिद्ध करना अपेक्षित होता है कि कोई पाटन नहीं हो रहा है । पाटनरोधी शुल्क में संशोधन या समाप्त किए जाने की स्थिति में उत्पाद के पाटन की कोई संभावना नहीं है ।

घ. निर्यातक के लिए यह सिद्ध करना अपेक्षित होता है कि पाटनरोधी शुल्क में संशोधन या समाप्त किए जाने की स्थिति में उत्पाद के पाटन की कोई संभावना नहीं है ।

ङ नियम 23 के अंतर्गत ऐसी 3 जांचें हैं जिन पर निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा विचार करना अपेक्षित होता है :-

- i. ऐसे विशिष्ट क्षेत्रों का पता लगाना जिनमें समीक्षा की जरूरत हेतु पर्याप्त "परिवर्तित परिस्थितियों" का पता चलता हो ।
- ii. उपाय में अंतर या उसे समाप्त किए जाने की स्थिति में पाटन और/अथवा क्षति जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना होगी अर्थात् पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने पर "कोई क्षति" होने की संभावना की पुष्टि करने की जरूरत है ।
- iii. क्या मौजूदा उपायों के कारण घरेलू उद्योग क्षति को समाप्त करने और पाटन का मुकाबला करने में सक्षम रहा है जिससे क्षति हो रही थी अथवा क्षति पहुंचाने वाले पाटन का मुकाबला करने के लिए शुल्क अब पर्याप्त नहीं रह गया है ।

च आवेदक ने यह दावा किया है कि सामान्य मूल्य में गिरावट आई है और निर्यात कीमत में वृद्धि हुई है । तथापि, इसका तात्पर्य यह नहीं है कि कोई पाटन नहीं हो रहा है । याचिकाकर्ता ने इस बात का दावा ही नहीं किया है कि (क) उत्पाद का अब पाटन नहीं हो रहा है और (ख) इस बात

की संभावना नहीं है कि शुल्क में संशोधन किए जाने या समाप्त किए जाने की स्थिति में पाटन जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना है ।

छ. समीक्षा अवधि में शुल्क में संशोधन करने या समाप्त करने के लिए कोई पाटन पर्याप्त नहीं है।

ज. शुल्क समाप्ति की जरूरत की पुष्टि करने का दायित्व आवेदक का है ।

झ. दक्षिण कोरिया से फेनोल का निर्यात सामान्य मूल्य से कम कीमत पर किया गया है जिससे लगातार पाटन हुआ है ।

ञ. यदि कोरिया के निर्यात आंकड़ों को लिया जाता है तो पाटन मार्जिन काफी अधिक है ।

ट. कोरिया गण. से तीसरे देशों को हुए निर्यातों से स्पष्ट तौर पर यह पता चलता है कि (क) ऐसे निर्यात उस कीमत पर हुए हैं जो भारत को कोरिया गण. से निर्यात की कीमत से काफी कम है (जिससे आगे इस बात की पुष्टि होती है कि भारत के लिए निर्यात कीमत अविश्वसनीय है जिसे अस्वीकृत किया जाना चाहिए), और (ख) तीसरे देशों को इन निर्यातों के संबंध में पाटन काफी अधिक है । इससे पाटनरोधी शुल्क को समय पूर्व समाप्त किए जाने की स्थिति में अत्यधिक पाटन होने की संभावना की पुष्टि होती है ।

अन्य हितबद्ध पक्षकारों (निर्यातकों, आयातकों तथा अंतिम प्रयोक्ताओं) के विचार

21. अन्य हितबद्ध पक्षकारों ने निम्नानुसार अनुरोध किए हैं :-

क. समीक्षा जांच में पाटन मार्जिन की पुनः जांच की जानी चाहिए क्योंकि अनुच्छेद 9.2 तथा 9.3 के संयुक्त पाटन से यह संकेत मिलता है कि यदि लगाए गए पाटनरोधी शुल्क की राशि पाटन मार्जिन से अधिक है तो उसे "उचित" नहीं माना जा सकता ।

ख. पाटनरोधी करार, सी.शु. टैरिफ अधिनियम और उसके अंतर्गत बनाए गए नियमों के उपबंधों में किसी समीक्षा जांच में पाटन मार्जिन के पुनः निर्धारण का स्पष्ट प्रावधान है ।

ग. समूची अवधि के लिए वास्तविक पाटन मार्जिन की गणना की जानी चाहिए ताकि धारा 9 क में निर्धारित शुल्क वापसी की मांग संगत प्रावधान के अंतर्गत की जा सके । आयातक वास्तविक पाटन मार्जिन के अभाव में देय शुल्क वापसी की औपचारिक मात्रा का दावा करने में असमर्थ हैं ।

घ. पाटन या क्षति मार्जिन, जो भी अधिक हो, के बराबर सामान्य मूल्य तथा पहुंच लागत के बीच अंतर के संदर्भ में पाटनरोधी शुल्क लगाया जाना चाहिए ।

ड वित्त विधेयक, 2011 द्वारा संशोधित धारा 9 क क में प्रत्येक आयात के संबंध में वास्तविक पाटन मार्जिन के निर्धारण की परिकल्पना की गई है जो तभी संभव होता है जब विशिष्ट सामान्य मूल्य तथा पहुंच लागत के बीच परिवर्ती शुल्क का तंत्र मौजूद हो ।

च. लगाई गई पूंजी पर आय की अनिर्दिष्ट दर को लागू कर परिकलित लागत की कार्यप्रणाली का उपयोग करना अनुचित है जब अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में तदनुरूपी सामान्य मूल्य आई सी आई एस-एल ओ आर की प्रकाशित रिपोर्टों में उपलब्ध हो ।

छ. कुम्हो द्वारा पूर्ण सहयोग किया जा रहा है और वह संबंधित बंधुक्त निर्धारणों की पात्र है ।

ज. जांच अवधि के दौरान कीमत में उतार चढ़ाव के कारण मासिक सूचना तथा पाटन मार्जिन प्रस्तुत किया गया है ।

झ. कुम्हो के दोनों सौदे स्थापित परंपरा तथा प्राधिकारी की नजीरों के अनुसार पाटन मार्जिन के निर्धारण हेतु प्रतिनिधिक हैं । विकल्प के तौर पर प्राधिकारी मौके पर बाजार बिक्री तथा डिब्बा बंद बिक्री दोनों को पाटनरोधी शुल्क के क्षेत्र से अलग रख सकते हैं क्योंकि दीर्घावधिक बल्क बिक्री के मामले में कीमतें अधिक हैं और मात्रा कम है और इस प्रकार क्षति नहीं हो सकती है ।

ञ. घरेलू उद्योग का यह तर्क पूर्णतः निराधार है कि तीसरे देश को हुए निर्यात की कीमत तथा भारत को निर्यात की कीमत के बीच अंतर आनुमानिक है क्योंकि यह सुझाव देने के लिए कोई साक्ष्य नहीं दिया गया है कि तीसरे देश और भारत को निर्यात व्यापार के उसी स्तर पर किए गए थे, इस बात की पुष्टि के लिए कोई साक्ष्य नहीं है कि भारत के लिए निर्यात कीमत कमीशन योग्य नहीं थी और व्यापार के उन्हीं निबंधनों एवं शर्तों पर की गई थी, यह प्रदर्शित करने के लिए कोई साक्ष्य नहीं है कि अन्य तीसरे देशों के लिए निर्यात कीमत दीर्घावधि संविदा के अंतर्गत बाध्यकारी थी और कोई निर्यातक आयात कीमत को अधिक बताने के लिए विशिष्ट निर्धारित शुल्क प्रणाली में मदद कैसे ले सकता है ।

प्राधिकारी द्वारा जांच

सामान्य मूल्य

22. प्राधिकारी ने संबद्ध देश के ज्ञात निर्यातकों को निर्धारित प्रपत्र में और ढंग से सूचना प्रदान करने की सलाह देते हुए उन्हें प्रश्नावली भेजी । इसके उत्तर में निम्नलिखित उत्पादकों तथा निर्यातकों ने निर्यातक प्रश्नावली प्रस्तुत की है और प्राधिकारी से उनके प्रश्नावली के उत्तर के आधार पर पाटन मार्जिन निर्धारित करने का अनुरोध किया है ।

(क) मै. एल जी कैम, कोरिया गण.,

(ख) मै. कुम्हो पी एंड बी कैमिकल्स, कोरिया गण.

मै. कुम्हो पी एंड बी कैमिकल्स इंक. संबद्ध वस्तु की उत्पादक है और उसने दो व्यापारियों अर्थात् मै. हुमेद कंपनी, कोरिया गण. तथा मै. केमोइल कंपनी, कोरिया गण. के जरिए संबद्ध वस्तु का निर्यात किया है। दोनों व्यापारियों ने भी प्रश्नावली का उत्तर दायर किया है और अनुरोध यह है कि उन्हें अलग व्यवहार प्रदान किया जाए।

सामान्य मूल्य के निर्धारण हेतु प्रतिवादी निर्यातकों के लिए अपनाई गई सामान्य कार्य प्रणाली

23. घरेलू उद्योग ने यह तर्क दिया है कि जांच अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु की कीमत में उतार-चढ़ाव रहा था। अतः प्राधिकारी ने पाटन के निर्धारण हेतु समूचे आंकड़ों का माहवार विश्लेषण किया। माहवार आधार पर विश्लेषण करने के लिए सहयोगी उत्पादकों/निर्यातकों से आवश्यक आंकड़े मांगे गए थे जो प्रस्तुत कर दिए गए थे और पाटन मार्जिन का निर्धारण मासिक आधार पर किया गया है।

24. प्राधिकारी ने सामान्य मूल्य का निर्धारण निर्यातकों द्वारा प्रस्तुत सूचना के आधार पर और नियमों के अनुसार किया है। सर्वप्रथम यह देखा गया था कि क्या प्रतिवादी निर्यातकों/उत्पादकों द्वारा अपने घरेलू बाजारों में की गई संबद्ध वस्तु की घरेलू बिक्री प्रतिनिधिक है और उनकी घरेलू बिक्री कीमत के आधार पर सामान्य मूल्य की गणना हेतु व्यवहार्य है और क्या प्रतिवादियों द्वारा प्रदत्त आंकड़ों के अनुसार व्यापार की सामान्य प्रक्रिया की जांच पूरी होती है। अपने उत्तरों में प्रतिवादियों ने अपने घरेलू बाजारों में की गई बिक्री के सौदेवार ब्यौरे उपलब्ध कराए। इस प्रकार प्रदत्त सूचना पर संबद्ध वस्तु की पृथक भारित औसत घरेलू बिक्री कीमत के निर्धारण हेतु भरोसा किया गया है। व्यापार की सामान्य प्रक्रिया की जांच करने के लिए संबद्ध उत्पाद की उत्पादन लागत मौके पर किए गए सत्यापन के अनुसार स्वीकार की गई है। इसके अलावा, समस्त घरेलू बिक्री सौदों की जांच संबद्ध वस्तु की उत्पादन लागत के संदर्भ में की गई थी ताकि यह निर्धारित किया जा सके कि क्या घरेलू बिक्री व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में की गई थी। यह भी देखा गया था कि क्या घाटे पर किए गए सौदे बिक्री के 20 प्रतिशत से अधिक बनते हैं या नहीं। जहां कहीं लाभदायक घरेलू बिक्री सौदे कुल बिक्री के 80 प्रतिशत से अधिक पाए गए थे वहां घरेलू बिक्री की भारित औसत कीमत पर विचार किया गया है। तथापि, जहां लाभकारी बिक्री मात्रा 80 प्रतिशत से कम पायी गई थी वहां लाभकारी घरेलू बिक्री की भारित औसत कीमत पर विचार किया गया है।

मै. एल जी कैम लि., कोरिया गण. के लिए सामान्य मूल्य

25. कंपनी द्वारा दायर उत्तर की विस्तृत जांच की गई थी। निर्यतक से कहा गया था कि वह संबद्ध वस्तु के लिए माहवार लागत के आंकड़े प्रस्तुत करे जो प्रस्तुत कर दिए गए थे। आंकड़ों का विश्लेषण करने के बाद प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू बिक्री पर्याप्तता की जांच पर खरी उतरती है। इसके अलावा, उत्तर की परिशिष्ट- 8 ख में उल्लिखित संबद्ध वस्तु के मासिक उत्पादन लागत का सत्यापन व्यापार की सामान्य प्रक्रिया की जांच करने के लिए मौके पर सत्यापन के दौरान किया गया है। उसके समायोजनों की अनुमति मौके पर सत्यापन के दौरान नोट तथा सत्यापित किए गए अनुसार प्रदान की गई है। ऐसे निर्धारण के आधार पर जांच अवधि के लिए भारित औसत सामान्य मूल्य (घरेलू बिक्री तथा लागत आंकड़ों के माहवार विश्लेषण के आधार पर) निर्धारित किया गया है।

मै. कुम्हो पी एंड बी कैमिकल्स, कोरिया गण. के लिए सामान्य मूल्य

26. कंपनी द्वारा दायर उत्तर का अवलोकन किया गया था। निर्यतक से कहा गया था कि वह संबद्ध वस्तु के लिए माहवार लागत के आंकड़े प्रस्तुत करे जो प्रस्तुत कर दिए गए थे। आंकड़ों का विश्लेषण करने के बाद प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू बिक्री पर्याप्तता की जांच पर खरी उतरती है। इसके अलावा, उत्तर की परिशिष्ट- 8 ख में उल्लिखित संबद्ध वस्तु के मासिक उत्पादन लागत का सत्यापन व्यापार की सामान्य प्रक्रिया की जांच करने के लिए मौके पर सत्यापन के दौरान किया गया है। उसके समायोजनों की अनुमति मौके पर सत्यापन के दौरान नोट तथा सत्यापित किए गए अनुसार प्रदान की गई है। ऐसे निर्धारण के आधार पर जांच अवधि के लिए भारित औसत सामान्य मूल्य (घरेलू बिक्री तथा लागत आंकड़ों के माहवार विश्लेषण के आधार पर) निर्धारित किया गया है।

निर्यात कीमत

27. प्राधिकारी ने प्रतिवादी निर्यातकों द्वारा दायर प्रश्नावली के उत्तर में किए गए दावे के अनुसार उनके संबंध में निर्यात कीमत की जांच की है। निर्यात कीमत और उसके समायोजनों की अनुमति मौके पर सत्यापन के दौरान नोट और सत्यापित किए गए अनुसार प्रदान की गई है।

मै. एल जी कैम लि., कोरिया गण. के लिए सामान्य मूल्य

28. प्रतिवादी ने भारत को संबद्ध वस्तु के निर्यातों के बारे में परिशिष्ट 2 में सूचना प्रस्तुत की है। एल जी कैम द्वारा भारत को संबद्ध वस्तु का सीधे निर्यात एफ ओ बी आधार पर किया गया है। बैंक प्रभारों, निर्यात निरीक्षण शुल्क तथा ऋण व्यय के लिए समायोजनों की अनुमति मौके पर सत्यापन के दौरान नोट किए गए अनुसार प्रदान की गई है। ऐसे निर्धारण के आधार पर

आंकड़ों के माहवार विश्लेषण के अनुसार भारित औसत कारखाना निर्यात कीमत का निर्धारण किया गया है ।

मै. कुम्हो पी एंड बी कैमिकल्स इंक के लिए निर्यात कीमत

29. जांच अवधि के दौरान संबद्ध के उत्पादक मै. कुम्हो पी एंड बी कैमिकल्स इंक. ने कोरिया गण. में स्थित दो व्यापारियों अर्थात् मै. हुमेद कंपनी एवं मै. केमोइल कंपनी के जरिए संबद्ध वस्तु का निर्यात किया है । दोनों व्यापारियों ने सहयोग किया है और उत्तर दायर किया है तथा इन व्यापारियों द्वारा प्रस्तुत सूचना का विधिवत सत्यापन किया गया है । व्यापारियों ने भारत को निर्यातों के बारे में परिशिष्ट 2 में सूचना प्रस्तुत की है । पैकिंग लागत, अंतरदेशीय भाड़े, हैंडलि प्रभार, समुद्री भाड़े, समुद्री बीमा, हैंडलिंग, सीमाशुल्क दलाली, कमीशन, ऋण व्यय, बैंक प्रभार एवं शुल्क प्रति अदायगी के लिए समायोजनों की अनुमति मौके पर सत्यापन के दौरान नोट और सत्यापित किए गए अनुसार की गई है । ऐसे निर्धारण के आधार पर कुम्हो पी एंड बी कैमिकल्स द्वारा मै. हुमेद कंपनी के जरिए किए गए निर्यातों और कुम्हो पी एंड बी कैमिकल्स द्वारा मै. केमोइल कंपनी के जरिए किए गए निर्यातों के लिए आंकड़ों के माहवार विश्लेषण के आधार पर भारित औसत कारखाना निर्यात कीमत निकाली गई है ।

असहयोगी निर्यातकों/उत्पादकों के संबंध में सामान्य मूल्य तथा निर्यात कीमत का निर्धारण

30. चूंकि संबद्ध वस्तु के किसी अन्य उत्पादक/निर्यातक से कोई अन्य उत्तर प्राप्त नहीं हुआ है, इसलिए प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(8) के अनुसार उपलब्ध तथ्यों के आधार पर सामान्य मूल्य तथा निर्यात कीमत का निर्धारण किया है । तदनुसार, असहयोगी निर्यातकों/उत्पादकों के लिए भारित औसत सामान्य मूल्य तथा निर्यात कीमत का निर्धारण आवेदक एवं अन्य सहयोगी निर्यातक द्वारा प्रदत्त आंकड़ों के आधार पर किया गया है ।

31. उपर्युक्तानुसार निर्धारित सामान्य मूल्य तथा निर्यात कीमत पर विचार करते हुए पाटन मार्जिन का निर्धारण निम्नानुसार किया गया है :-

पाटन मार्जिन

अम.डा. प्रति मी.ट.

क्र.सं.	देश -उत्पादक/निर्यातक	सामान्य मूल्य	निर्यात कीमत	पाटन मार्जिन	पाटन मार्जिन %
	कोरिया गण.				
1	मै. एल जी कैम लि.	****	****	****	-3.16
2	मै. कुम्हो पी एंड बी कैमिकल्स इंक द्वारा उत्पादित और मै. हुमेद कंपनी, कोरिया गण. द्वारा निर्यातित फेनोल	****	****	****	0.90
3	मै. कुम्हो पी एंड बी कैमिकल्स इंक द्वारा उत्पादित और मै. केमोयल कंपनी, कोरिया गण. द्वारा निर्यातित फेनोल	****	****	****	-3.84
4	कोरिया गण. के सभी उत्पादक तथा निर्यातक	****	****	****	5.55

छ. क्षति निर्धारण एवं कारणात्मक संबंध का निर्धारण**क्षति निर्धारण तथा क्षति जारी जारी रहने या पुनरावृत्ति होने की संभावना****निर्यातकों के अनुरोध**

32. निर्यातक (मै. एल जी कैम लि.) ने निम्नानुसार अनुरोध किए हैं :-

- कोरिया गण. द्वारा तीसरे देशों के लिए निर्यात कीमत पर "संभावना की जांच" की जांच हेतु विचार नहीं किया जा सकता । कानून में किसी मध्यावधि समीक्षा में ऐसे आंकड़ों पर विचार करने का कोई आधार नहीं है ।
- पाटन की संभावना का अनुमान लगाते हुए परंतु उसे स्वीकार न करते हुए यह काफी नहीं है कि "क्षति पहुंचाने वाले पाटन की संभावना" है और न कि केवल पाटन की संभावना है ।
- भारत एवं विश्व बाजारों में फेनोल की वर्तमान कीमत जांच अवधि के दौरान प्रचलित कीमत से काफी अधिक है । जांच अवधि की तुलना में घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत में 51 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि हुई है । अतः पाटनरोधी शुल्क जारी रखने की कोई जरूरत नहीं है ।

- iv. घरेलू उद्योग ने क्षति की पुनरावृत्ति के बारे में सेस्टेट के कुछ पूर्ववर्ती जांच परिणाम का हवाला दिया है। इस मामले के तथ्य नितांत भिन्न हैं अर्थात् (i) घरेलू उद्योग भारी मुनाफा कमा रहा है, (ii) घरेलू उद्योग की क्षमता मांग से कम है और (iii) लघु उद्योग भी इस उत्पाद की खपत कर रहे हैं। अतः शुल्क लगाए जाने से क्या लघु उद्योग जीवित रह सकते हैं।
- v. भारत के लिए निर्यात कीमत तीसरे देशों की कीमत से अधिक है।
- vi. संभावना का कथन अनुचित है। यदि घरेलू उद्योग के तर्क को स्वीकार कर भी लिया जाए तो शुल्क का संदर्भ कीमत के आधार पर उद्ग्रहण अपेक्षित है।
- vii. भारत कुमहो का एक संकेन्द्रित बाजार नहीं है। इसने पूर्व वर्ष में 6 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि की थी। अतः कुमहो द्वारा क्षति का कोई खतरा नहीं है। घरेलू उद्योग के उत्तर में एस आई ग्रुप इंडिया लि. की कोई भागीदारी नहीं है।
- viii. एस आई ग्रुप के क्षति आंकड़ों के अभाव में प्राधिकारी पाटनरोधी नियमावली के नियम 11 की अपेक्षा का अनुपालन करने में असमर्थ हैं। इस बात की प्रबल संभावना है कि उसे कोई क्षति नहीं हुई है और इसलिए उसने संगत आंकड़ों के साथ जांच में भाग लेने से बचाव किया है।
- ix. घरेलू उत्पादक ने उत्पादन, बिक्री मात्रा में लगातार सुधार किया है जिससे यह पता चलता है कि समान वस्तु के घरेलू बाजार में कीमत पर आयातों का प्रभाव नहीं पड़ा है।
- x. कच्ची सामग्री अर्थात् बेंजीन की कीमत में बिक्री कीमत में हुई 35% की वृद्धि की तुलना में केवल 17% की वृद्धि हुई है।
- xi. उचित आय कमाने के लिए विनिर्माता की क्षमता मोटे तौर पर वैश्विक प्रतिस्पर्धा तथा युक्तिसंगत शुल्क संरचना जैसे मापदंडों के कड़े होने और कड़े गुणवत्ता नियंत्रणों के कारण प्रभावित हुई है।
- xii. इस मामले में पाटनरोधी शुल्क संदर्भ कीमत पर लागू किया जाना चाहिए।
- xiii. घरेलू उद्योग ने सार्वजनिक सुनवाई में यह स्वीकार किया है कि पहुंच कीमत बिक्री कीमत से अधिक है जिससे एकेलिक फाइबर बनाम निर्दिष्ट प्राधिकारी तथा जिंदल स्टेनलैस लि. बनाम निर्दिष्ट प्राधिकारी के मामले में न्यायालय के निर्णय के अनुसार कारणात्मक संबंध की मौजूदगी सिद्ध नहीं होती है।
- xiv. घरेलू उद्योग ने उत्पादन, क्षमता उपयोग, बिक्री मात्रा, बिक्री कीमत, लाभ, पूंजी निवेश पर आय एवं नकद लाभ जैसे अधिकांश मापदंडों में सकारात्मक प्रवृत्ति प्रदर्शित की है।

xv. घरेलू उद्योग की योजना इस अवधि में इष्टतम क्षमता को घटाने की नहीं है । अतः कम क्षमता उपयोग का दोष पाटन को नहीं दिया जा सकता ।

xvi. यह तर्क दिया गया है कि क्षति रहित कीमत का निर्धारण कारखाना से भांडागार तक अंतरदेशीय भाड़े, अंतिम मात्रागत छूट जैसे व्यय नकद लाभ, को शामिल करके किया जाना चाहिए जो अस्वीकार्य है क्योंकि क्षतिरहित कीमत की गणना अनुबंध-III के पैरा iv के खंड vii (ख) के अनुसार की जानी चाहिए जिसमें यह उल्लेख है कि क्षति रहित कीमत का निर्धारण कारखाना स्तर पर किया जाता है ।

xvii. निर्यात कीमत में वृद्धि लगभग 84% हुई है जबकि मुख्य कच्ची सामग्री में केवल 17% की वृद्धि हुई है ।

xviii. निर्यात कीमत में वृद्धि हुई है तथा सामान्य मूल्य में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है । अतः पाटन नकारात्मक है ।

xix. वैश्विक रूप से (एच ओ सी एल सहित) मूल जांच की जांच अवधि की तुलना में फेनोल की कीमत दोगुनी हुई है ।

xx. मूल जांच की जांच अवधि में लगाई गई पूंजी पर आय 22.92% से बढ़कर 112.68% हो गई । घरेलू उद्योग पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ा । परिणामतः पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने पर घरेलू उद्योग को कोई नुकसान नहीं होगा ।

xxi. घरेलू उद्योग का क्षमता उपयोग 86% से बढ़कर 104% हो गया जिसका तात्पर्य यह है कि उसने क्षमता से अधिक अपने संयंत्र का उपयोग किया है ।

xxii. उत्पादन एवं बिक्री मात्रा में अत्यधिक वृद्धि हुई है ।

xxiii. बेंजीन की लागत में 8,000 रु. प्रति मी.ट. की वृद्धि हुई है और बिक्री लागत बढ़कर 45,000 रुपए प्रति मी.ट. हो गई है । इससे यह पता चलता है कि घरेलू उद्योग का योगदान बढ़कर लगभग 37,000 रुपए प्रति मी.ट. हो गया है ।

xxiv. क्षति अवधि में घरेलू उद्योग के लाभ में भारी वृद्धि हुई है ।

xxv. घरेलू उद्योग की क्षमता उपयोग और बिक्री में वृद्धि हुई है ।

xxvi. कच्ची सामग्री, बेंजीन (बेंजीन का उपयोग कुमेन के उत्पादन में किया जाता है और इसलिए राशि को भी समायोजित करना होगा) की कीमत में वृद्धि की तुलना में उत्पाद की घरेलू बिक्री कीमत में भारी वृद्धि हुई है ।

XXVII. दुलाई लागत जैसे कुछेक व्यय को जोड़ने और शामिल करने की घरेलू उद्योग की मांग पर व्यापार के समान स्तर पर पहुंच कीमत निकालने में

घरेलू उद्योग के अनुरोध

33. घरेलू उद्योग ने ये तर्क दिए हैं कि :-

- i. किसी मध्यावधि समीक्षा जांच में क्षतिरहित कीमत तथा निवल बिक्री प्राप्ति के बीच अंतर महत्वहीन होता है जैसा कि प्राधिकारी ने कई मामलों में निर्णय दिया है । पाटनरोधी शुल्क ऐसे कई निर्णायक समीक्षा जांच के मामलों में लागू किया गया है जिनमें क्षतिरहित कीमत निवल बिक्री प्राप्ति से कम थी । वर्तमान मामला केवल मध्यावधि समीक्षा जांच का है और इसलिए यह उद्देश्य अत्यधिक सीमित है ।
- ii. पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के कारण घरेलू उद्योग के निष्पादन में सुधार हुआ है । परंतु यह उस स्थिति में पूरे तौर पर नहीं आया है जो पाटन शुरू होने से पूर्व थी ।
- iii. कोरिया गण. से वर्तमान आयात कीमत अविश्वसनीय है । अतः ऐसी कीमतों पर आधारित कीमत कटौती, कम कीमत पर बिक्री और क्षति मार्जिन स्पष्ट तौर पर आधारहीन हैं ।
- iv. यदि यह मान भी लिया जाए कि घरेलू उद्योग को अब क्षति नहीं हो रही है तो पाटनरोधी शुल्क की समयपूर्व समाप्ति हेतु यह नितांत अपर्याप्त है क्योंकि इस बात की पुष्टि की जानी चाहिए कि पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में कोई क्षति होने की संभावना नहीं है ।
- v. क्षति रहित कीमत का निर्धारण सकल अचल परिसंपत्तियों पर विचार करते हुए किया जाना अपेक्षित है और वह भी वर्तमान बाजार मूल्य पर ।
- vi. पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के कारण घरेलू उद्योग के निष्पादन में सुधार हुआ है । पाटन अवधि की तुलना में उत्पादन, क्षमता उपयोग, बिक्री मात्रा, बिक्री कीमत, निवेश पर आय, लाभ, नकद लाभ में सुधार हुआ है । तथापि, (क) यह सुधार पाटन की तुलना में अधिक है और (ख) वर्ष 2007-08 (पाटन पूर्व की अवधि) की तुलना में निष्पादन अभी भी प्रतिकूल है । दूसरे शब्दों में घरेलू उद्योग उस स्थिति में पूरे तौर पर नहीं आया है जो पाटन शुरू होने से पूर्व थी ।
- vii. इस बात का अनुमान लगाते हुए परंतु उसे स्वीकार न करते हुए कि घरेलू उद्योग को अब क्षति नहीं हो रही है, तो भी यह पाटनरोधी शुल्क की समय पूर्व समाप्ति के लिए सर्वथा

अपर्याप्त है । मध्यावधि समीक्षा के चरण पर पाटनरोधी शुल्क समाप्ति की मांग करने वाले हितबद्ध पक्षकारों को यह सिद्ध करना चाहिए कि पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में "घरेलू उद्योग को कोई क्षति होने की संभावना" नहीं है ।

- viii. "क्षति की कोई संभावना नहीं" को सिद्ध करने का दायित्व घरेलू उद्योग पर नहीं है । यह दायित्व निर्दिष्ट प्राधिकारी के समक्ष याचिकाकर्ता पर होता है । प्राधिकारी के लिए "जारी रखने के औचित्य" का निर्धारण करना अपेक्षित होता है । "जारी रखने का औचित्य" "शुल्क समाप्ति के औचित्य" से भिन्न है ।
- ix. जिस कीमत पर कोरिया ने तीसरे देशों को उत्पाद का निर्यात किया है उससे स्पष्ट तौर पर यह सिद्ध होता है कि यदि इन कीमतों पर इस अवधि के दौरान भारत को निर्यात किया गया होता तो परिणामी आयातों के कारण अत्यधिक कीमत कटौती और कम कीमत पर बिक्री हुई होती । परिणामी क्षति मार्जिन भी अत्यधिक सकारात्मक रहा होता ।
- x. तीसरे देशों से भारत में भारत औसत आयात कीमत से स्पष्टतः अत्यधिक कीमत कटौती, कम कीमत पर बिक्री और सकारात्मक क्षति मार्जिन की पुष्टि होती है । यदि कोरिया के उत्पादकों ने तीसरे देशों से तुलनीय कीमत पर उत्पाद की बिक्री की होती तो परिणामी आयातों के कारण कीमत कटौती तथा सकारात्मक पाटन मार्जिन के संबंध में अत्यधिक क्षति हुई होती ।
- xi. कोरिया से विभिन्न वैश्विक बाजारों को अत्यधिक निर्यात, विश्व बाजार में अत्यधिक बेसी क्षमता और निकट भविष्य में क्षमता में नई अभिवृद्धि से स्पष्ट तौर पर अत्यधिक मुक्त रूप से निपटान योग्य उत्पादन क्षमताओं की मौजूदगी की पुष्टि होती है ।
- xii. क्षतिरहित कीमत में निम्नलिखित व्यय शामिल होने चाहिए ।

क. कारखाने से देश के भीतर भांडागार तक अंतरदेशीय भाड़ा

ख. अंतिम अवधि में मात्रात्मक छूट-मात्र इस तथ्य कि यह व्यय "छूट है" का तात्पर्य यह नहीं निकाला जाना चाहिए कि क्षति रहित कीमत के निर्धारण हेतु उसे अलग रखना चाहिए । हालांकि "बीजकगत" छूट की कटौती करना उचित हो सकता है क्योंकि यह छूट बिक्री के समय दी जाती है; तथापि, "बीजक बाह्य" छूट बिक्री नीति के रूप में होती है जो अंतिम अवधि छूट होती है और जिसकी आयात प्रतिस्पर्धा के लिए कोई प्रासंगिकता नहीं होती है और इसीलिए इसकी कटौती नहीं की जानी चाहिए ।

ग. नकद छूट

अन्य हितबद्ध पक्षकारों (आयातकों तथा प्रयोक्ताओं) के उत्तर

34. यह ऐसा मामला है जिसमें डी जी ए डी के समक्ष आरोपित पाटित आयातों से क्षति का दावा करने वाले विभिन्न विवरण झूठे हैं जिनमें उचित शंका करने की कोई गुंजाइश नहीं है। घरेलू उद्योग ने सार्वजनिक रूप से निर्णय लेने में अर्धन्यायिक प्राधिकारी को गुमराह किया है।

प्राधिकारी द्वारा जांच

क्षति का जारी रहना

35. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध II में यह उपबंध है कि क्षति के निर्धारण में (क) पाटित आयातों की मात्रा और समान उत्पाद के लिए घरेलू बाजार में कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव पाटित आयातों की मात्रा और समान वस्तुओं के लिए घरेलू बाजार में कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव; तथा (ख) ऐसे उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातकों के परिणामी प्रभाव, दोनों की तथ्यपरक जांच शामिल होगी। पाटित आयातों की मात्रा की जांच करते समय उक्त प्राधिकारी इस बात पर विचार करेंगे कि क्या पाटित आयातों में समग्र रूप में या भारत में उत्पादन या खपत की तुलना में पर्याप्त वृद्धि हुई है। जहां तक कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव का संबंध है, प्राधिकारी इस बात पर विचार करेंगे कि क्या पाटित आयातों द्वारा भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में अत्यधिक कीमत कटौती हुई है अथवा क्या ऐसे आयातों के प्रभाव से कीमतों में अन्यथा अत्यधिक गिरावट आई है या कीमत में होने वाली उस वृद्धि में रूकावट आई है, जो अन्यथा पर्याप्त स्तर तक बढ़ गई होती।

36. जहां तक घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव का संबंध है, पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-II के पैरा (iv) में निम्नानुसार उल्लेख है: "संबंधित घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच में बिक्री लाभ, उत्पादन, बाजार हिस्से, उत्पादकता, निवेश पर आय या क्षमता उपयोग में स्वाभाविक और संभावित गिरावट, सहित उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले सभी संगत आर्थिक कारकों और संकेतकों; घरेलू कीमतों, पाटन मार्जिन की मात्रा, नकद प्रवाह पर वास्तविक और संभावित नकारात्मक प्रभाव, मालसूची, रोजगार, मजदूरी, वृद्धि, पूंजी निवेश जुटाने की क्षमता को प्रभावित करने वाले कारकों का मूल्यांकन शामिल होगा।"

37. प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों के तर्कों और तथ्यों को ध्यान में रखते हुए क्षति मापदंडों की तथ्यपरक जांच की है। क्षति मापदंडों का विश्लेषण करने के लिए दोनों उत्पादकों के लेखा परीक्षित तुलन पत्र सहित समस्त संगत दस्तावेजों की जांच की गई है और प्राधिकारी ने सत्यापन किया है। प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग के लेखापरीक्षित लेखों की भी जांच की है। प्राधिकारी द्वारा भारतीय उद्योग के हित एवं अन्य मुद्दों पर उचित शीर्षों में कार्रवाई की है। उपभोक्ताओं के पाटनरोधी शुल्क लागू होने के कारण असहयोगी बन जाने तथा पाटनरोधी शुल्क का प्रभाव अंतिम उत्पाद पर पड़ने के मुद्दे के बारे में यह नोट किया जाता है कि संबद्ध वस्तु पर पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के कारण उपभोक्ताओं के

असहयोगी बनने का प्रश्न ही नहीं उठता खासकर तब जब पाटनरोधी शुल्क की राशि पाटन मार्जिन तथा क्षति मार्जिन, जो भी कम हो तक सीमित रखी जाए। इसके अलावा, यह स्वीकार किया जाता है कि पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने से संबद्ध वस्तु का उपयोग करते हुए विनिर्मित उत्पादों के कीमत स्तर प्रभावित हो सकते हैं और परिणामतः इन उत्पादों की तुलनात्मक प्रतिस्पर्धात्मकता पर कुछ प्रभाव पड़ सकता है। तथापि, पाटनरोधी उपायों से भारतीय बाजार में उचित प्रतिस्पर्धा कम नहीं होगी, खासकर तब जब पाटनरोधी शुल्क का उद्ग्रहण घरेलू उद्योग को हुई क्षति दूर करने के लिए आवश्यक राशि तक सीमित रखा जाए। इसके विपरीत पाटनरोधी उपाय लागू किए जाने से पाटन के व्यवहार द्वारा प्राप्त अनुचित लाभ समाप्त होंगे, घरेलू उद्योग का ह्रास रुकेगा और संबद्ध वस्तु के उपभोक्ताओं के लिए व्यापक विकल्प उपलब्ध रखने में मदद मिलेगी।

मांग, आयात तथा घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा

38. वर्तमान जांच में याचिकाकर्ता और घरेलू उद्योग ने निर्यातकों के खुद के आंकड़ों के अलावा, गौण स्रोतों अर्थात् डी जी सी आई एस, आई बी आई एस तथा कोरिया सीमाशुल्क (के आई टी ए) के आधार पर आयात के आंकड़े प्रस्तुत किए। अपेक्षित सूचना मांगते हुए प्राधिकारी ने डी जी सी आई एस कार्यालय को भी पत्र लिखा। प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच अवधि के लिए निर्यातकों के आंकड़ों तथा डी जी सी आई एस द्वारा उपलब्ध कराए गए आंकड़ों में प्रदर्शित आयात की मात्रा में भारी अंतर है। प्राधिकारी आगे यह नोट करते हैं कि संबद्ध देश (कोरिया गण) के निर्यातकों ने समर्थकारी दस्तावेजों के साथ निर्यात मात्रा के बारे में अलग-अलग उत्तर प्रस्तुत किए हैं। कोरिया गण. के निर्यातकों ने अपने आंकड़ों के आधार पर निर्यात मात्रा और कीमत की पुष्टि की है। प्राधिकारी ने वर्तमान जांच के लिए कोरिया गण. को छोड़कर सभी संबद्ध देशों से हुए अयातों पर डी जी सी आई एस एंड एस के आंकड़ों के आधार पर विचार किया है। तथापि, कोरिया गण. के मामले में चूंकि निर्यातों की मात्रा कोरिया गण. से निर्यातों की स्वीकार की गई मात्रा की तुलना में डी जी सी आई एस के आंकड़ों में कम पाई गई है इसलिए प्राधिकारी ने कोरिया गण. सीमाशुल्क द्वारा प्रस्तुत आंकड़ों के आधार पर निर्यातों पर विचार किया है जो निर्यातकों द्वारा अपने उत्तर में सूचित मात्रा से मेल खाती है। उपर्युक्त के आधार पर संबद्ध देशों से निर्यात की मात्रा और कुल मांग में घरेलू उद्योग का हिस्सा निम्नानुसार है :

विवरण	इकाई	2007-08	2008-09	2009-10	जांच अवधि
एच ओ सी एल की बिक्री	मी.ट.	43,723	40,924	37,671	40,214
एस आई इंडस्ट्रीज की बिक्री*	मी.ट.	29247	31451	31958	36,969
भारतीय घरेलू उत्पादकों की बिक्री	मी.ट.	72,970	72,375	69,629	77,183
प्रवृत्ति	%	100	99	95	106
संबद्ध देश-आयात*	मी.ट.	5,805	144	32	1,593
प्रवृत्ति	%	100	2	1	27
अन्य देश	मी.ट.	94,617	90,004	100,058	95087
भारत में कुल आयात	मी.ट.	100422	90148	100090	96680
प्रवृत्ति	%	100	90	100	96
भारत में कुल मांग	मी.ट.	173392	162523	169719	173863
प्रवृत्ति	%	100	94	98	100

विभिन्न मापदंडों की तुलना में आयात

39. प्राधिकारी ने भारत में उत्पादन और खपत की तुलना में संबद्ध आयातों की प्रवृत्ति का विश्लेषण किया है। यह नोट किया जाता है कि जांच अवधि के दौरान भारत में समान उत्पाद की मांग और कुल आयातों की तुलना में संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के आयातों में गिरावट आई है। इसके अलावा, इसमें भारत में घरेलू उद्योग की बिक्री तथा खपत की तुलना में भी गिरावट आई है जैसा कि निम्नलिखित तालिका से देखा जा सकता है :

विवरण	इकाई	2007-08	2008-09	2009-10	जुलाई,09- जून,2010 (जांच अवधि)
कोरिया गण से आयात	मी.ट.	5,805	144	32	1,595
प्रवृत्ति		100	2	1	27
कुल आयात	मी.ट.	100422	90148	100090	96680
प्रवृत्ति		100	94	98	100
भारत में मांग	मी.ट.	173392	162523	169719	173863
प्रवृत्ति		100	94	98	100
भारतीय उत्पादकों की बिक्री	मी.ट.	72,970	72,375	69,629	77,183
प्रवृत्ति		100	99	95	106
मांग के % के रूप में कोरिया से आयात	%	3.35	0.09	0.02	0.92
मांग में भारतीय उत्पादकों का हिस्सा	%	42.08	44.53	41.03	44.39
मांग में कुल आयातों का हिस्सा	%	57.92	55.47	58.97	55.61

40. प्राधिकारी ने संबद्ध वस्तु की कुल मांग और भारतीय उद्योग की बिक्री को ध्यान में रखते हुए घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा निर्धारित किया है। उपर्युक्त तालिका से यह नोट किया जाता है कि भारतीय उत्पादकों के बाजार हिस्से में 2009-10 में गिरावट आई परंतु आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में मामूली वृद्धि हुई जबकि इसी समय कोरिया गण. से संबद्ध वस्तु के बाजार हिस्से में 73% की गिरावट आई।

उत्पादन, क्षमता तथा क्षमता उपयोग

41. निम्नलिखित तालिका से यह नोट किया जाता है कि आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में घरेलू उद्योग के उत्पादन में 1 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। तथापि, जांच अवधि के दौरान क्षमता उपयोग 107 प्रतिशत रहा था। यह भी नोट किया जाता है कि इसी अवधि में उत्पाद की मांग में वृद्धि नहीं हुई है।

विवरण	इकाई	2007-08	2008-09	2009-10	जुलाई,09- जून,2010
क्षमता	मी.ट.	40,000	40,000	40,000	40,000
उत्पादन	मी.ट.	41,908	42,641	36,751	41,543

प्रवृत्ति		100	102	88	99
-----------	--	-----	-----	----	----

लाभप्रदता

42. संबद्ध वस्तु के बारे में घरेलू उद्योग की लाभप्रदता की जांच केवल घरेलू बिक्री के संबंध में की गई है। यह देखा जाता है कि वर्ष 2007-08 की तुलना में 2008-09 तथा 2009-10 के दौरान संबद्ध वस्तु के लिए घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में गिरावट आई परंतु जांच अवधि में अत्यधिक वृद्धि हुई।

विवरण	इकाई	2007-08	2008-09	2009-10	जुलाई,09- जून2010
बिक्री लागत	रू./मी.ट.	****	****	****	****
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	101	102	104
निवल बिक्री प्राप्ति	रू./मी.ट.	****	****	****	****
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	92	92	103
लाभ/हानि	रू./मी.ट.	****	****	****	****
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	33	30	99
कर पूर्व लाभ	लाख रुपए	****	****	****	****
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	27	26	78

रोजगार तथा मजदूरी

43. जांच अवधि और क्षति अवधि के दौरान कर्मचारियों की संख्या में कोई खास परिवर्तन नोट नहीं किया गया है। तथापि, कंपनी की मजदूरी लागत में समग्र आधार पर और प्रति कर्मचारी मजदूरी के संबंध में वृद्धि हुई है।

विवरण	इकाई	2007-08	2008-09	2009-10	जुलाई,09- जून2010
कर्मचारियों की संख्या	संख्या	****	****	****	****

प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	94	94	109
मजदूरी	लाख रुपए	****	****	****	****
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	102	105	113
प्रति कर्मचारी मजदूरी	लाख रुपए	****	****	****	****
प्रवृत्ति		100	108	111	104

उत्पादकता

44. क्षति अवधि के आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान प्रति दिवस और प्रति कर्मचारी उत्पादकता में कोई परिवर्तन नोट नहीं किया गया है।

विवरण	इकाई	2007-08	2008-09	2009-10	जुलाई, 09- जून 2010
प्रति दिवस उत्पादकता	मी.ट.	****	****	****	****
सूचीबद्ध	प्रवृत्ति	100	102	88	99
प्रति कर्मचारी उत्पादकता	मी.ट.	****	****	****	****
सूचीबद्ध	प्रवृत्ति	100	102	88	99

निवेश पर आय तथा नकद प्रवाह

45. निवेश पर आय का निर्धारण ब्याज पूर्व लाभ तथा कर एवं उत्पाद के लिए लगाई गई पूंजी पर विचार करने के बाद किया गया है। नकद प्रवाह पर प्रभाव का निर्धारण मूल्यहास से पूर्व परंतु ब्याज लागत के बाद लाभ पर विचार करते हुए किया गया है। वर्ष 2007-08 की तुलना में 2008-09 और 2009-10 के दौरान लगाई गई पूंजी पर आय में गिरावट नोट की गई है परंतु इसमें उसके बाद अत्यधिक वृद्धि हुई है। जांच अवधि के दौरान लगाई गई पूंजी पर आय *** % थी।

विवरण	इकाई	2007-08	2008-09	2009-10	जुलाई,09- जून2010
लाभ/हानि	रु./मी.ट.	****	****	****	****
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	33	30	99
कर पूर्व लाभ	लाख रुपए	****	****	****	****
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	27	26	78
आर ओ सी ई	%	****	****	****	****
सूचीबद्ध	प्रवृत्ति	100	29	29	82
नकद लाभ	लाख रुपए	****	****	****	****
सूचीबद्ध	प्रवृत्ति	100	23	24	79

मालसूची

46. निम्नलिखित तालिका से यह नोट किया जाता है कि आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में घरेलू उद्योग के मालसूची स्तर में गिरावट है ।

विवरण	इकाई	2007-08	2008-09	2009-10	जुलाई,09- जून2010
आरंभिक	मी.ट.	2,307	492	2,209	461
अंतिम	मी.ट.	492	2,209	1,289	1,790
औसत	मी.ट.	1,399	1,351	1,749	1,126
	सूचीबद्ध	100	96.57	125.01	80.49

वृद्धि

47. घरेलू उद्योग की क्षमता में कोई वृद्धि नहीं हुई है जो जांच अवधि में 104% पर प्रचालन कर रहा है। जांच अवधि की तुलना में कर्मचारियों की संख्या में लगभग 0 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में प्रति दिवस उत्पादकता स्थिर रही है।

पूंजी निवेश जुटाने की क्षमता

48. पूंजी निवेश जुटाने की क्षमता के बारे में घरेलू उद्योग ने कोई तर्क नहीं दिया है। घरेलू उद्योग ने क्षमता विस्तार की किसी योजना का संकेत नहीं दिया है। घरेलू उद्योग द्वारा प्राप्त लाभप्रदता के स्तर के कारण यह स्पष्ट है कि अपेक्षा किए जाने पर पूंजी निवेश जुटाने की घरेलू उद्योग की क्षमता पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ना चाहिए।

पाटन का स्तर तथा पाटन मार्जिन

49. जैसा कि प्रकटन विवरण के अनुबंध-II में स्पष्ट किया गया है, मै. एल जी कैम. लि. के मामले में पूर्ववर्ती पैराओं में निर्धारित पाटन मार्जिन निर्यात के सभी महीनों में नकारात्मक पाया गया है। मै. के पी बी द्वारा हुमेद के जरिए किए गए निर्यातों के मामले में पाटन मार्जिन सकारात्मक पाया गया है जबकि केमोयल के जरिए मै. के पी बी द्वारा किए गए निर्यातों के मामले में यह नकारात्मक पाया गया है। तथापि, असहयोगी निर्यातक के लिए पाटन मार्जिन सकारात्मक निर्धारित किया गया है।

आयातों का कीमत प्रभाव

50. जहां तक कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव का संबंध है, इस बात की जांच की गई है कि क्या भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में पाटित आयातों द्वारा कीमत में अत्यधिक कटौती की गई है अथवा ऐसे आयातों के प्रभाव के कारण कीमत में इतनी अधिक गिरावट आई है अथवा होने वाली कीमत वृद्धि में रुकावट आई है जिसमें अन्यथा वृद्धि हुई होती। संबद्ध उत्पाद हेतु तुलना निर्यातित उत्पाद के पहुंच मूल्य और घरेलू बाजार हेतु घरेलू उद्योग की औसत बिक्री कीमत के बीच तुलना व्यापार के उसी स्तर पर सभी रिबेटों और करों के बिना की गई थी। घरेलू उद्योग की कीमत का निर्धारण कारखाना स्तर पर किया गया था। इस तुलना से यह पता चला कि जांच अवधि के दौरान कोरिया गण. के मूल की संबद्ध वस्तु की भारतीय बाजार में बिक्री घरेलू उद्योग की कीमत से अधिक मूल्य पर की गई थी। अतः यह देखा जाता है कि आयातों से घरेलू कीमतों में कटौती नहीं हो रही थी और वर्ष 2009:10 को छोड़कर क्षति अवधि में कीमत कटौती का मार्जिन नकारात्मक पाया गया है।

विवरण	इकाई	2007-08	2008-09	2009-10	जुलाई, 09- जून 2010 (जांच अवधि)
कोरिया गण. से पहुंच मूल्य	रु./ किग्रा.	****	****	****	****
निवल बिक्री प्राप्ति	रु./ किग्रा.	****	****	****	****
कीमत कटौती	रु./ किग्रा.	****	****	****	****
कीमत कटौती	%	-11.98	-28.20	31.56	-4.07
कीमत कटौती	% रेंज	नकारात्मक	नकारात्मक	नकारात्मक	नकारात्मक

51. प्राधिकारी द्वारा सहयोगी निर्यातकों के संबंध में कीमत कटौती की गणना की गई है जो निम्नानुसार है:

क्र.सं.	विवरण	निर्यातक	कीमत कटौती	कीमत कटौती %
1	मै. एल जी कैम, कोरिया गण.	मै. एल जी कैम, कोरिया गण.	****	-6.68
2	मै. कुमहो पी एंड बी कैमिकल्स, कोरिया गण.	मै. हुमेद कं. कोरिया गण.	****	14.83
3	मै. कुमहो पी एंड बी कैमिकल्स, कोरिया गण.	मै. कैमोयल कं. कोरिया गण.	****	-11.68
4	कोरिया गण. से अन्य सभी उत्पादक तथा निर्यातक	कोरिया गण. से अन्य सभी उत्पादक तथा निर्यातक	****	14.83

52. प्राधिकारी ने संबद्ध देश से पाटित आयात के कारण घरेलू उद्योग के कीमत ह्रास, कीमत न्यूनीकरण और कम कीमत पर बिक्री, यदि कोई हो, की भी जांच की है। जांच के बाद प्राधिकारी नोट करते हैं कि वर्ष 2008-09 तथा 2009-10 में जहां घरेलू उद्योग उत्पादन लागत में परिवर्तन के अनुरूप अपनी बिक्री कीमत बढ़ाने में असमर्थ था परंतु उसने जांच अवधि में ऐसा किया। बिक्री कीमत में वृद्धि उत्पादन लागत में वृद्धि से मामूली कम है। निर्यातों के पहुंच मूल्य में 2008-09 के दौरान वृद्धि हुई तथा 2009-10 में गिरावट आई और जांच अवधि में पुनः वृद्धि हुई। घरेलू उद्योग को जांच अवधि के दौरान कोई कीमत ह्रास का सामना भी नहीं करना पड़ा है।

विवरण	इकाई	2007-08	2008-09	2009-10	जांच अवधि
घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति	रु./मी.	****	****	****	****
सूचीबद्ध		100	92	92	103
बिक्री की लागत-घरेलू	रु./मी.	****	****	****	****
सूचीबद्ध		100	101	102	104
पहुंच कीमत	रु./मी.	78702	88637	48480	74580
सूचीबद्ध		100	112.62	61.60	94.76

53. प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत पर विचार करते हुए घरेलू उद्योग की क्षति रहित कीमत निर्धारित की है। घरेलू उद्योग की इस क्षति रहित कीमत की तुलना क्षति मार्जिन निर्धारित करने के लिए संबद्ध आयातों के पहुंच मूल्य के साथ की गई है। क्षति मार्जिन का निर्धारण उचित शीर्षों में किए गए उल्लेख के अनुसार पाटन मार्जिन के अनुरूप किया गया है। क्षति मार्जिन की गणना निम्नानुसार की गई है:

क्षति मार्जिन को दर्शाने वाली तालिका

विवरण	निर्यातक	क्षति मार्जिन	क्षति मार्जिन %
मै. एल जी कैम, कोरिया गण.	मै. एल जी कैम, कोरिया गण.	****	-14.46
मै. कुमहो पी एंड बी कैमिकल्स, कोरिया गण.	मै. हुमेद कं. कोरिया गण.	****	1.23
मै. कुमहो पी एंड बी कैमिकल्स, कोरिया गण.	मै. कैमोयल कं. कोरिया गण.	****	-11.14
कोरिया गण से अन्य सभी उत्पादक तथा निर्यातक	कोरिया गण से अन्य सभी उत्पादक तथा निर्यातक	****	1.23

क्षति जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना

54. प्राधिकारी को यह निर्धारित करना होता है कि पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में क्या संबद्ध देशों से पाटित कीमत पर भारतीय बाजार में संबद्ध वस्तु का प्रवेश जारी रहेगा अथवा उसका निर्यात किए जाने की संभावना है। इस बात की जांच करना प्रासंगिक है कि शुल्क समाप्त या परिवर्तित किए जाने की स्थिति में क्या इन पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को क्षति होने की संभावना है। यह पहले ही सिद्ध किया जा चुका है कि तीसरे देशों को संबद्ध देशों से आयात का वास्तविक पहुंच मूल्य घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत और घरेलू उद्योग के लिए निर्धारित क्षति रहित कीमत से कम है।

55. प्राधिकारी ने जांच के दौरान विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रदत्त सूचना और साक्ष्य के आधार पर घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति की पुनरावृत्ति की संभावना की भी जांच की है। प्राधिकारी ने नियमावली के अनुबंध-II (vii) के अनुसार वास्तविक क्षति की आशंका से संबंधित मापदंडों पर विचार करते हुए क्षति के जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की जांच की है; जिसमें निम्नानुसार उल्लेख है :-

"वास्तविक क्षति की आशंका का निर्धारण तथ्यों पर आधारित होगा और न कि आरोप, निराधार कल्पना या सुदूर संभावना पर। परिस्थितियों में परिवर्तन जिनसे ऐसी स्थिति उत्पन्न होती है जिनमें पाटन से क्षति होगी, स्पष्ट रूप से दिखने चाहिए और आसन्नवर्ती होने चाहिए। वास्तविक क्षति के खतरे की मौजूदगी के संबंध में निर्धारण करते समय निर्दिष्ट प्राधिकारी अन्य बातों के साथ-साथ ऐसे कारकों पर विचार करेंगे और;

(क) भारत में पाटित आयातों में वृद्धि की अधिक दर जिससे आयातों में पर्याप्त वृद्धि की संभावना का संकेत मिलता हो।

(ख) निर्यातक की क्षमता में पर्याप्त मुक्त रूप से निपटान योग्य, या आसन्नवर्ती, पर्याप्त वृद्धि जिनसे किसी अतिरिक्त निर्यात को खपाने के लिए अन्य बाजारों की उपलब्धता को ध्यान में रखते हुए भारतीय बाजार में पाटित निर्यातों में पर्याप्त वृद्धि की संभावना का संकेत मिलता हो।

(ग) क्या आयात ऐसी कीमतों पर हो रहे हैं, जिनसे घरेलू कीमतों पर काफी ह्रासकारी या न्यूनकारी प्रभाव पड़ेगा और इनसे अधिक उत्पादों की मांग बढ़ने की संभावना है तथा

(घ) उस वस्तु की वस्तु सूची की जांच की जा रही हो"

घरेलू उद्योग के विचार

56. घरेलू उद्योग ने निम्नानुसार अनुरोध किया है:

क. आवेदक ने याचिका के साथ ऐसी कोई सामग्री नहीं दी है कि पाटन और क्षति की कोई संभावना नहीं है। किसी मध्यावधिक समीक्षा जांच में निर्यातक के लिए यह सिद्ध करना महत्व नहीं लगता है कि उत्पाद का पाटन वर्तमान समीक्षा अवधि में किया जा रहा है। निर्यातक के लिए यह सिद्ध करना अपेक्षित होता है कि कोई पाटन नहीं हुआ है और पाटनरोधी शुल्क में संशोधन या उसके समापन की स्थिति में उत्पादन के पाटन की कोई संभावना नहीं है। इसी प्रकार घरेलू उद्योग को क्षति की मात्र गैर मौजूदगी अपर्याप्त है। निर्यातक के लिए यह सिद्ध करना होता है कि पाटनरोधी शुल्क में संशोधन या समापन किए जाने की स्थिति में क्षति की कोई संभावना नहीं है।

ख. चूंकि निर्दिष्ट प्राधिकारी के लिए मध्यावधि समीक्षा जांच में पाटन एवं क्षति की संभावना की जांच अपेक्षित होती है इसलिए इसका तात्पर्य यह है कि प्राधिकारी की ओर से इस संबंध में संगत सूचना और साक्ष्य प्रस्तुत करना अपेक्षित है।

ग. नियम 23 के अंतर्गत प्राधिकारी द्वारा शुरू की गई समीक्षा कार्रवाई में ऐसी 3 जांचें हैं जिन पर निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा विचार करना अपेक्षित है।

घ. ऐसे विशिष्ट क्षेत्रों की पहचान करना जिनके अंतर्गत समीक्षा की जरूरत हेतु पर्याप्त "परिवर्तित परिस्थितियाँ" विद्यमान हों।

ड. उपाय को समाप्त या उसमें परिवर्तन किए जाने की स्थिति में पाटन और/अथवा क्षति जारी रहने की संभावना नहीं होगी अर्थात् पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में "कोई क्षति" न होने की संभावना की पुष्टि किए जाने की जरूरत है।

च. क्या घरेलू उद्योग मौजूदा उपायों के कारण क्षति को समाप्त करने अथवा ऐसे पाटन का मुकाबला करने में सक्षम हुआ है जिससे क्षति हो रही है अथवा क्षति पहुंचाने वाले पाटन का मुकाबला करने के लिए वह अब सक्षम नहीं है।

छ. यह दावा किया गया है कि सामान्य मूल्य में गिरावट आई है और निर्यात कीमत बढी है। तथापि इसका तात्पर्य यह नहीं है कि कोई पाटन नहीं हुआ है। याचिकाकर्ता ने यह दावा नहीं किया है कि (क) उत्पाद का अब पाटन नहीं किया जा रहा है और (ख) शुल्क में संशोधन या समापन किए जाने की स्थिति में पाटन जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना नहीं है। इस संबंध में कोई सकारात्मक साक्ष्य भी नहीं है।

ज. कोरिया गण. से विभिन्न वैश्विक बाजारों में पर्याप्त निर्यात, विश्व बाजार में पर्याप्त बेशी क्षमता और निकट भविष्य में क्षमता में नई वृद्धि से स्पष्टतः मुक्त रूप से निपटान योग्य पर्याप्त उत्पादन क्षमता का स्पष्ट आभास होता है ।

झ. संबद्ध देश द्वारा तीसरे देशों को संबद्ध वस्तु की बिक्री भारत के लिए निर्यात कीमत से कम कीमत पर की जा रही है ।

आवेदक निर्यातक के विचार

57. आवेदक निर्यातक (मै. एल जी कैम) ने निम्नानुसार अनुरोध किए हैं :-

- (क) उन्होंने फेनोल संयंत्र की स्थापना मुख्यतः विस्फेनोल-ए के विनिर्माण हेतु आबद्ध मांग को पूरा करने के लिए की है । संबद्ध वस्तु की केवल मामूली मात्रा का निर्यात किया जाता है ।
- (ख) भारत और विश्व में फेनोल की कीमत बढ़ रही है और वृद्धि यह प्रवृत्ति जांच अवधि के बाद जारी है । वर्तमान मध्यावधि समीक्षा जांच की जांच अवधि के बाद घरेलू उद्योग ने फेनोल की कीमत में 51 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि की है ।
- (ग) कोरिया गण. से निर्यात कीमत में भी यही प्रवृत्ति दिखाई दी है । माह दिसंबर, 2010 के दौरान कोरिया गण. से एफ ओ बी कीमत 2000 अम.डॉ. प्रति मी.ट. थी जो वर्तमान मध्यावधि समीक्षा जांच की जांच अवधि के दौरान प्रचलित कीमत से लगभग 40% अधिक है ।

अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार

58. अन्य हितबद्ध पक्षकारों ने निम्नानुसार अनुरोध किए हैं :-

- क. पाटनरोधी उपाय का उद्देश्य कीमतों पर एकाधिकार स्थापित करने के लिए घरेलू उद्योग को सुविधा प्रदान करना नहीं है बल्कि क्षति पहुंचाने वाले पाटन के व्यापार विकृतिकारी प्रभावों को समाप्त करना है और इस प्रकार भारतीय बाजार में उचित प्रतिस्पर्धा सुनिश्चित करना है ।
- ख. इसके अलावा, घरेलू उद्योग ने क्षति की पुनरावृत्ति के बारे में तर्क दिए हैं और इसके समर्थन में सुनवाई के दौरान कुछ पूर्ववर्ती जांच परिणामों तथा सेस्टेट के निर्णय उद्धृत किए हैं । इस मामले के तथ्य सर्वथा भिन्न हैं क्योंकि इस मामले में (i) घरेलू उद्योग बेहतरीन/असामान्य लाभ कमा रहा है (ii) भारतीय उत्पादकों की क्षमता भारत में मांग से कम है और (iii) लघु उद्योग भी इस उत्पाद की खपत कर रहे हैं । अतः इस स्थिति में हम प्राधिकारी से यह पूछ सकते हैं कि क्या लघु प्रयोक्ता उद्योग जीवित रह सकते हैं ?

- ग. इस उत्पाद में घरेलू उद्योग अलग-अलग देशों से पाटनरोधी शुल्क लागू होने के कारण काफी समय से पाटनरोधी शुल्क का लाभ प्राप्त कर रहा है जबकि यह एक जिन्स उत्पाद है । घरेलू उद्योग हमेशा यह मांग करेगा कि पाटनरोधी शुल्क जारी रहना चाहिए क्योंकि वह पाटनरोधी शुल्क की आड़ में बेहतर मुनाफा कमाना चाहता है और उचित प्रतिस्पर्धा करना नहीं चाहता है । अतः उन्होंने फेनोल पर पाटनरोधी शुल्क हटाने का अनुरोध किया है ।

प्राधिकारी द्वारा जांच

59. प्राधिकारी ने जांच अवधि और जांच अवधि के बाद अनुमानित उत्पादन, घरेलू बिक्री, कोरिया गण. से आयात, जांच अवधि के बाद एक वर्ष के दौरान कोरिया गण. से संबद्ध वस्तु के आयात और जांच अवधि के दौरान अन्य देशों को निर्यात के संदर्भ में सहयोगी निर्यातकों से पूरक प्रश्नावली में अतिरिक्त सूचना मांगी थी ताकि नियम 23 में उल्लिखित क्षति की संभावना के बारे में घरेलू उद्योग द्वारा उठाए गए मुद्दों की जांच की जा सके । इस संबंध में प्राधिकारी निम्नानुसार नोट करते हैं :

- i. यह पाया गया है कि कोरिया गण. के दोनों प्रतिवादी निर्यातकों ने मुख्यतः विस्फेनोल-ए के विनिर्माण हेतु संबद्ध वस्तु की आंतरिक मांग को पूरा करने के लिए क्षमताएं सृजित की हैं । कोरिया के दोनों प्रतिवादी उत्पादकों/निर्यातकों द्वारा फेनोल के कुल उत्पादन के अधिकांश भाग की आबद्ध खपत की जाती है और घरेलू बिक्री की जाती है । शेष भाग का निर्यात भारत सहित अन्य देशों को किया जाता है । जांच अवधि के दौरान भारत को निर्यात बहुत सीमित हुए हैं । संयंत्र में सत्यापन के दौरान यह देखा गया था कि एल जी कैम ने फेनोल संयंत्र की उत्पादन क्षमता में मध्यावधि समीक्षा की जांच अवधि के बाद लगभग 10% की वृद्धि की है । यह नोट किया गया था कि क्षमता में वृद्धि विस्फेनोल-ए की संवर्धित क्षमता को पूरा करने के लिए की गई थी । यह पाया गया था कि कंपनी ने कुछेक प्रचालनों में अवरोध हटाने के कारण फेनोल की क्षमता बढ़ाई है और कोई अतिरिक्त संयंत्र तथा मशीनरी स्थापित नहीं की गई है । प्राधिकारी ने यह पाया है कि आवेदक निर्यातक द्वारा क्षमता में वृद्धि मूलतः आबद्ध जरूरत को पूरा करने के लिए की गई है ।
- ii. प्राधिकारी ने जांच अवधि के लिए भारत से मित्र देशों को फेनोल के निर्यातों के सौदेवार ब्यौरे भी प्राप्त किए थे । यह पाया गया था कि अन्य देशों के लिए निर्यात कीमत लगभग समान या भारत के लिए निर्यात कीमत से अधिक है । एल जी कैम के मामले में भारत को निर्यात के महीनों के दौरान अन्य देशों को औसत निर्यात कीमत भारत को औसत निर्यात कीमत से तुलनीय पाई गई थी । चूंकि कुम्हो पी एंड बी कैमिकल्स ने ड्रम रूप में संबद्ध वस्तु का निर्यात

किया है, इसलिए तदनुरूपी अवधि के दौरान उसी आधार पर तीसरे देशों के लिए निर्यात कीमत की तुलना से यह पता चलता है कि ये तुलनीय हैं ।

- iii. यह भी पाया गया था कि एल जी कैम तथा कुम्हो पी एंड बी कैमिकल्स, दोनों लगभग 100% क्षमता उपयोग पर प्रचालन कर रहे हैं ।
- iv. प्राधिकारी ने कोरिया के प्रतिवादी निर्यातकों के व्यवहार की तुलना में घरेलू उद्योग की स्थिति की भी जांच की है । प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच अवधि के दौरान कोरिया के निर्यातकों का कीमत व्यवहार घरेलू उद्योग को क्षतिकारी नहीं है । प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध देश से हुए आयातों के कारण घरेलू उद्योग की संबद्ध वस्तु की कीमत में कटौती नहीं हो रही है ।
- v. संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के पाटन के कारण घरेलू उद्योग को हुई क्षति और पाटन की संभावना की जांच करने के लिए प्राधिकारी ने तीसरे देशों से भारत को संबद्ध वस्तु की निर्यात मात्रा का मासिक विश्लेषण किया है । प्राधिकारी नोट करते हैं कि जुलाई, 2010—जून, 2011 की अवधि के दौरान चीनी कोरिया गण निर्यात मात्रा 1579 मी.ट. रही थी । पूर्ववर्ती वर्ष की इसी अवधि अर्थात् जुलाई, 2009—जून, 2010 के दौरान संबद्ध देशों से भारत को निर्यात की मात्रा 1595 मी.ट. थी । अतः प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांचोत्तर अवधि में संबद्ध देश से निर्यात मात्रा में कोई खास वृद्धि प्रदर्शित नहीं होती है जिससे घरेलू उद्योग को क्षति हो सकती हो ।
- vi. प्राधिकारी नोट करते हैं कि भारत में फेनोल की कीमत में जांच अवधि के बाद भी वृद्धि जारी है । जांचोत्तर अवधि में पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को हुई क्षति की संभावना की जांच करने के लिए प्राधिकारी ने जून, 2011—जुलाई, 2011 तक की अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत, निवल बिक्री प्राप्ति और लाभप्रदता का माहवार विश्लेषण भी किया है । उपर्युक्त विश्लेषण से यह पता चलता है कि उक्त अवधि के दौरान घरेलू उद्योग ने संबद्ध वस्तु की बिक्री पर लगातार लाभ कमाया है । इसके अलावा, घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति भी तदनुरूपी महीनों के लिए घरेलू उद्योग की क्षति रहित कीमत से काफी अधिक नोट की गई थी । अतः जांचोत्तर अवधि में कोई कीमत हासकारी और न्यूनकारी प्रभाव नहीं देखा गया है ।
- vii. प्राधिकारी ने आगे यह विश्लेषण किया कि यह मानते हुए कि यदि वर्तमान में लागू पाटनरोधी शुल्क उपरोक्त कारणों से समाप्त किया जाता है तो उन्हीं उत्पादकों/निर्यातकों के तीसरे देश को होने वाले निर्यात भारत को भेज दिए जाएंगे और घरेलू उद्योग पर इस प्रकार से भेजे गए निर्यातों का प्रभाव क्या पड़ेगा । इस संबंध में प्राधिकारी नोट करते हैं कि एल जी कैम के मामले में ऐसे तीसरे देश को हुए निर्यात का पहुंच मूल्य घरेलू उद्योग की क्षति रहित कीमत से अधिक है । कुम्हो पी एंड बी कैमिकल्स के मामले में ऐसे तीसरे देश को निर्यात का पहुंच मूल्य घरेलू उद्योग की क्षतिरहित कीमत से कम है ।

- viii. जांचोत्तर अवधि में निर्दिष्ट प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग की क्षति रहित कीमत की तुलना में संबद्ध देश से आयातों के पहुंच मूल्य का विश्लेषण भी किया है। कोरिया सी.शु. वेबसाइट के आईटीए से यह नोट किया जाता है कि कोरिया गण के आयातों का पहुंच मूल्य घरेलू उद्योग की क्षति रहित कीमत से सामान्यतः अधिक है। यह भी नोट किया गया था कि आयातों का पहुंच मूल्य घरेलू उद्योग की क्षति रहित बिक्री कीमत से काफी अधिक था। अतः जांचोत्तर अवधि में पहुंच मूल्य घरेलू उद्योग को कोई क्षति न पहुंचाने वाला माना गया था। वस्तुतः जांचोत्तर अवधि के लिए क्षति मार्जिन लगातार नकारात्मक रहा था।
- ix. जहां तक के पी बी के इस अनुरोध का संबंध है, कि उनके दो झौदों को स्थापित पद्धति तथा प्राधिकारी की नजीरों के अनुसार पाटन मार्जिन के निर्धारण हेतु प्रतिनिधिक माना जाए, प्राधिकारी ने ये नोट किया है कि मध्यावधि समीक्षा में पाटन एवं क्षति की संभावना की जांच करना महत्वपूर्ण होता है और प्राधिकारी ने जांच अवधि तथा जांचोत्तर अवधि के दौरान भारत और तीसरे देशों को के बी पी से हुए निर्यातों के प्रभाव की जांच की है। प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि के पी बी द्वारा निर्यातित वस्तु घरेलू उद्योग द्वारा विनिर्मित वस्तु के समान वस्तु है।
- x. घरेलू उद्योग ने यह तर्क दिया है कि संबद्ध देश तीसरे देशों को संबद्ध वस्तु की बिक्री भारत को निर्यात कीमत से कम कीमत पर कर रहा है। अतः पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में संबद्ध देश द्वारा भारत को अपने निर्यात भेजे जाने की संभावना है जिससे घरेलू उद्योग को क्षति होगी। इस संबंध में प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग की क्षति रहित कीमत और निवल बिक्री प्राप्ति की तुलना में संबद्ध देश से तीसरे देशों को निर्यात के पहुंच मूल्य का माहवार विश्लेषण किया है। यह नोट किया जाता है कि के आई सी टी के अनुसार कोरिया गण. से घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति की तुलना में तीसरे देशों से निर्यात का पहुंच मूल्य कम है। इससे यह भी पता चलता है कि यह मानने के बाद भी कि संबद्ध देशों से कुछ आयात भारत को भेजे जाएंगे, ऐसा शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में होगा। फिर भी उनसे घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति होने की संभावना नहीं है।

कारणात्मक संबंध

60. कारणात्मक संबंध के मुद्दे के बारे में हितवद्ध पक्षकारों के अनुरोधों की जांच की गई है। घरेलू उद्योग को हुई क्षति तथा घरेलू उद्योग को हुई वास्तविक क्षति तथा पाटित आयातों के बीच कारणात्मक संबंध के मुद्दों की विस्तृत जांच की गई थी। पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध- 11 के पैरा (v) में निम्नानुसार उल्लेख है:

" यह प्रदर्शित किया जाना चाहिए कि पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को क्षति हो रही है; जैसा कि उपर्युक्त पैराग्राफ (iii) तथा (iv) में उल्लेख किया गया है। पाटित आयातों तथा घरेलू उद्योग को हुई क्षति के बीच कारणात्मक संबंध का प्रदर्शन निर्दिष्ट प्राधिकारी के समक्ष सुसंगत साक्ष्य की

जांच पर आधारित होगा । इसके साथ ही निर्दिष्ट प्राधिकारी पाटित आयातों से इतर अन्य ज्ञात कारकों जिनके कारण घरेलू उद्योग को क्षति हो रही है, की भी जांच करेंगे और इन कारकों से हुई क्षति को पाटित आयातों का कारण नहीं माना जाएगा । इस संबंध में जो कारक प्रासंगिक हो सकते हैं, उनमें अन्य बातों के साथ-साथ आयातों की मात्रा एवं कीमतें; जिन्हें पाटित कीमतों पर नहीं बेचा गया, मांग में संकुचन अथवा खपत के पैटर्न में परिवर्तन, व्यापार प्रतिबंधात्मक पद्धतियां एवं विदेशी तथा घरेलू उत्पादकों के बीच प्रतिस्पर्धा, प्रौद्योगिकी का विकास एवं घरेलू उद्योग का निर्यात कार्यनिष्पादन एवं उत्पादकता शामिल हैं ।"

घरेलू उद्योग की टिप्पणियां

61. घरेलू उद्योग ने निम्नानुसार अनुरोध किया है :-

(क) घरेलू उद्योग ने यह अनुरोध किया है कि कोरियाई उत्पादकों के अत्यधिक निर्यात अभिमुखीकरण तथा विश्व बाजार में अत्यधिक वर्तमान एवं भावी बशी क्षमता को ध्यान में रखते हुए यह स्पष्ट है कि पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने के कारण कोरिया से (i) बिक्री कीमत, (ii) उत्पादन लागत तथा (iii) घरेलू उद्योग की क्षति रहित कीमत से कम कीमत पर आयातों में अत्यधिक वृद्धि होगी । अतः घरेलू उद्योग को लाभ में गिरावट की ऐसी स्थिति का सामना करना पड़ेगा जो पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में वित्तीय घाटे के बराबर होगा ।

(ख) वर्तमान जांच को पाटनरोधी शुल्क की राशि में कोई परिवर्तन किए बिना समाप्त करना अपेक्षित है । बहरहाल पाटनरोधी शुल्क की समय पूर्व समाप्ति का कोई मामला नहीं बनता है ।

(ग) इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि कोरिया से वर्तमान आयात कीमत अविश्वसनीय है, इसे कारणात्मक संबंध के निर्धारण हेतु अस्वीकृत नहीं किया जाना चाहिए । कोरिया गण. से विश्व बाजार के लिए वर्तमान निर्यात कीमत तथा भारत में विभिन्न तीसरे देशों से आयातों की भारित औसत कीमत को कारणात्मक संबंध के निर्धारण हेतु लिया जाना चाहिए । ये कीमतें क्षति रहित कीमत से काफी कम होने के कारण पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने से ऐसी स्थिति उत्पन्न होगी जिसमें घरेलू उद्योग क्षति रहित कीमत तथा वर्तमान बिक्री कीमत से कम कीमत निर्धारित करने के लिए बाध्य होगा । अतः शुल्क की समय पूर्व समाप्ति से घरेलू उद्योग को पुनः क्षति होने की संभावना है ।

62. प्राधिकारी ने इस बात की जांच की है कि क्या पाटनरोधी नियमावली में सूचीबद्ध अन्य कारकों की वजह से घरेलू उद्योग को क्षति हो सकती है । निम्नानुसार पाया गया है

तीसरे देशों से आयात

63. अन्य देशों से संबद्ध वस्तु का आयात काफी अधिक है ।

मांग में कमी

64. प्राधिकारी ने यह नोट किया है कि क्षति अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु की मांग में वृद्धि हुई है। मांग में संभावित कमी से घरेलू उद्योग को क्षति नहीं हो सकती है।

खपत की पद्धति में परिवर्तन

65. विचाराधीन उत्पाद के बारे में खपत की पद्धति में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है और न ही इस बारे में कोई मात्रात्मक आरोप लगाया गया है। जांच से अब तक वैकल्पित प्रतिस्पर्धी उत्पादों की मौजूदगी और ऐसे वैकल्पिक उत्पादों से होने वाली संभावित क्षति की मौजूदगी का पता नहीं चला है।

विदेशी और घरेलू उत्पादों के व्यापार प्रतिबंधात्मक प्रभाव और उनके बीच प्रतिस्पर्धा

66. प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध वस्तु का एकमात्र ऐसा बाजार है जहां कोरिया गण से पाटित आयात घरेलू उद्योग द्वारा आपूर्त संबद्ध वस्तु से सीधी प्रतिस्पर्धा करते हैं। यह नोट किया जाता है कि आयातित संबद्ध वस्तु और घरेलू रूप से उत्पादित वस्तु समान वस्तुएं हैं जिनका उपयोग समान अनुप्रयोगों/अंतिम प्रयोगों में किया जाता है। विदेशी उत्पादकों और घरेलू उत्पादकों के बीच घरेलू उद्योग को क्षति पहुंचाने वाले व्यापार प्रतिबंधात्मक व्यवहार और प्रतिस्पर्धा का कोई साक्ष्य नहीं है।

प्रौद्योगिकी विकास

67. प्रौद्योगिकी विकास का कोई आरोप नहीं है और न ही अब तक की जांच से यह पता चला है कि प्रौद्योगिकी विकास के कारण घरेलू उद्योग को संभावित क्षति हो सकती है।

निर्यात निष्पादन

68. घरेलू उद्योग ने कोई घरेलू बिक्री नहीं की है। तथापि, प्राधिकारी ने केवल घरेलू प्रचालन और घरेलू लाभप्रदता पर विचार किया है।

घरेलू उद्योग की उत्पादकता

69. घरेलू उद्योग की उत्पादकता में कोई खास परिवर्तन नहीं हुआ है। आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान श्रमिक उत्पादन और दैनिक उत्पादन के संबंध में घरेलू उद्योग की उत्पादकता में वृद्धि हुई

है। यह भी नोट किया जाता है कि उत्पादन और बिक्री में वृद्धि के साथ-साथ समूची क्षति अवधि में वृद्धि हुई है।

निष्कर्ष

70. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा दिए गए तर्कों, प्रदान की गई सूचना और किए गए अनुरोधों तथा उपर्युक्त जांच परिणाम में दर्ज किए गए अनुसार प्राधिकारी के समक्ष उपलब्ध तथ्यों और उपयुक्त विश्लेषण के आधार पर प्राधिकारी निष्कर्ष निकालते हैं कि :-

- i. यद्यपि, इस मध्यावधि समीक्षा में जांच अवधि के दौरान संबद्ध देश (कोरिया गण.) के स्रोतों में से एक स्रोत से पाटित कीमत पर विचाराधीन उत्पाद के आयात हुए हैं तथापि, इसका जांच अवधि और जांचोत्तर अवधि के दौरान घरेलू उद्योग पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ा है।
- ii. जांच अवधि के दौरान संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के आयातों के कारण घरेलू उद्योग की कीमत में कटौती नहीं हो रही है और घरेलू उद्योग की मात्रा, कीमत तथा लाभप्रदता पर इसके प्रतिकूल प्रभाव का अभाव है। इसके अलावा, जांच अवधि तथा जांचोत्तर अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत, निवल बिक्री प्राप्ति और लाभप्रदता के माहवार विश्लेषण से यह पता चलता है कि उक्त अवधियों के दौरान घरेलू उद्योग ने संबद्ध वस्तु की बिक्री पर लगातार लाभ कमाया है। इसके अलावा, घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति उसी अवधि के तदनुसारी महीनों के लिए घरेलू उद्योग की क्षति रहित कीमत से काफी अधिक पाई गई थी। अतः जांच अवधि और जांचोत्तर अवधि में कीमतहासकारी तथा/अथवा न्यूनकारी प्रभाव का कोई साक्ष्य नहीं है।
- iii. क्षति जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना के निर्धारण हेतु जांच अवधि और जांचोत्तर अवधि के दौरान कीमत प्रभाव के स्थायी स्वरूप तथा घरेलू उद्योग पर उसके प्रभाव के निर्धारण के बारे में घरेलू उद्योग की क्षति रहित कीमत और संबद्ध देश से तीसरे देशों को निर्यातों के पहुंच मूल्य के माहवार विश्लेषण से यह पता चला कि संबद्ध देश से तीसरे देशों को संबद्ध वस्तु के निर्यातों का पहुंच मूल्य सामान्यतः घरेलू उद्योग के लिए निर्धारित क्षति रहित कीमत से अधिक था। इससे यह संकेत मिलता है कि यह मानते हुए भी कि पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने के बाद संबद्ध देश से कुछ निर्यात भारत को भेजे जाते हैं तो भी उनसे घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति होने की संभावना नहीं है।

सिफारिशें

71. उपर्युक्तानुसार, निष्कर्ष निकालने के बाद प्राधिकारी का यह मत है कि कोरिया गण. के मूल के और वहां से निर्यातित फेनोल पर पाटनरोधी शुल्क को निरंतर लागू रखने की कोई जरूरत नहीं है और इसलिए उसे समाप्त किया जाना अपेक्षित है।

72. केन्द्र सरकार के इस आदेश के खिलाफ कोई अपील सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के अनुसार, सीमाशुल्क, उत्पाद शुल्क और सेवाकर अपीलीय न्यायाधिकरण में दायर की जा सकेगी ।

विजयलक्ष्मी जोशी, निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY

(Department of Commerce)

(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)

NOTIFICATION

New Delhi, the 23rd February, 2012

FINAL FINDINGS

Subject : Mid-Term review investigation concerning import of Phenol originating in or exported from Korea RP.

No. 15/31/2010-DGAD.— Having regard to the Customs Tariff Act, 1975 as amended from time to time, and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules 1995 thereof:

A. BACKGROUND OF THE CASE

Having regard to the Customs Tariff Act, 1975, as amended from time to time (hereinafter referred to as the Act) and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995 (hereinafter referred to as the AD Rules or the Rules), the Designated Authority (hereinafter referred to as the Authority) initiated a Mid Term Review anti-dumping investigation on 26th November, 2010, into alleged dumping of Phenol (hereinafter referred to as the subject goods) originating in or exported from Korea RP (hereinafter referred to as the subject country). The original investigation was initiated on 11th January, 2007 against imports of Phenol originating in and exported from Korea RP, USA and Taiwan. The provisional antidumping duty was imposed on imports of Phenol from all the three countries vide Customs Notification No. 105/2007-Customs dated 19th September, 2007 on the basis of the Preliminary Findings of the Authority issue vide Notification dated 29th August, 2007. The Final Findings were notified by the Designated Authority vide Notification No 14/5/2006-DGAD dated 07th January, 2008, and the Department of Revenue imposed definitive anti dumping duties on the imports of the subject goods from the above mentioned countries vide Notification No 30/2008-Customs dated 03rd March, 2008.

2. And whereas Rule 23 of the AD Rules requires the Authority to review, from time to time, the need for continued imposition of anti-dumping duty, and if the Authority is satisfied on the basis of positive information received by it that there is no justification for continued imposition of such duty, the Authority may recommend to the Central Government for its withdrawal. In terms of the legal provisions, the Designated Authority received an application from one of the exporters of the subject goods, namely, M/s. LG Chem. Ltd., Korea RP, substantiating the need for a Mid Term Review (MTR) of the anti dumping duty imposed on the subject goods originating in or exported from Korea RP and requested the Authority for withdrawal/revision of the anti dumping duty. The exporter submitted that due to change in major parameters, such as increase in price of the basic raw materials, increase in the export price of the subject goods from Korea RP to India and substantial increase in domestic prices of the subject goods in India as also substantial increase in domestic price of the subject goods in Korea RP, there is a need to review the anti dumping duty imposed by the Authority. It has further been argued that dumping from Korea RP by the subject exporter does not exist at all and there is a need for downward revision of the dumping margin and consequent duty which is in place.

3. This change in circumstances, on the basis of prima facie evidence, was considered appropriate by the Authority to initiate the Mid Term Review. Having decided to review the Final Findings notified vide Notification No. 14/5/2006-DGAD dated 07.01.2008, the Authority initiated the investigations vide Initiation Notification No 15/31/2010-DGAD dated 26.11.2011 in terms of the Rule 23 of the AD Rules, to review the imposition of anti dumping duty on the subject goods being imported from the subject country.

B. PROCEDURE FOLLOWED IN THE INVESTIGATION

4. The procedure described below has been followed in the present investigation:

- i) The Authority received an application from M/s. LG Chem. Ltd., Korea RP, for review of the anti dumping duty in force on the imports of Phenol from Korea RP.
- ii) Having satisfied itself that the petitioner has produced sufficient prima facie information substantiating the need for a mid term review, the Authority initiated the Mid Term Review investigation of anti-dumping duty imposed on imports of the subject goods originating in or exported from Korea RP vide Notification No. 15/31/2010 dated 26.11.2010 under Rule 23 of the AD Rules. The scope of the present review covers all aspects of the original Notification.
- iii) The Embassy of the Government of Korea RP in New Delhi was informed about the initiation of the investigation, in accordance with Rule 6 (2), with a request to advise all the exporters/producers in their country to respond to the prescribed Questionnaire within the prescribed time.

iv) After initiating the review, the Authority sent Exporter Questionnaires, along with the Initiation Notification, to all the known producers and/or exporters of the subject goods in the subject country including the exporter/producer M/s. Kumho P&B Chemicals Inc in accordance with the Rule 6(4) of the AD Rules to elicit relevant information.

v) The following filed Exporter Questionnaire response:

- M/s LG Chem. Ltd, Korea RP,
- M/s Kumho P& B Chemicals Inc, Korea RP,
- M/s Humade Corporation, Korea RP, Trader Exporter of M/s Kumho P& B Chemicals Inc, Korea RP, and
- M/s Chemoil Corporation, Korea RP, Trader /Exporter of M/s Kumho P& B Chemicals, Inc, Korea RP

vi) Importers' Questionnaires were sent to the following known importers, consumers, industrial users of the subject goods in India, calling for necessary information in accordance with Rule 6(4) of the AD Rules:

- C. J. Shah and Company, Mumbai
- Haresh Kumar and Company, Mumbai
- PCL Industries New Delhi
- Kantilal Manilal and Company Mumbai
- Sonkamal Enterprises Mumbai
- Khetan Brothers Mumbai
- Shubam Dyes & Chemicals Limited Delhi
- Acron Enterprises Ahmedabad
- Naiknavare Chemicals Limited Mumbai
- Paras Dyes & Chemicals New Delhi
- Torrent Pharmaceuticals Limited Gujrat
- United Phosphorous Ltd. Mumbai
- Resins & Plastic Ltd. Mumbai
- Kailash Polymers New Delhi
- Centrum Metalics Pvt. Ltd. Mumbai
- Wonder Laminates Pvt. Ltd. West Bengal
- Meghdev Enterprises Ahmedabad
- Satguru International New Delhi
- High Polymer Labs Ltd. New Delhi
- Rainbow Colours & Chemicals Gujrat
- Bleach Marketing Pvt. Ltd. Gujrat
- Karmen International (P) Ltd. Tamil Nadu

- Krishna Antioxidants Pvt. Ltd. Mumbai
- NGP Industries Ltd. New Delhi
- Farmson Pharmaceutical Gujrat Ltd. Baroda
- India Glycols Ltd. New Delhi
- Singh Plasticisers and Resins (I) Pvt. Ltd. New Delhi
- National Plywood Industries Ltd. West Bengal

vii) None of the above filed any response to the Importer Questionnaire in the form and manner prescribed. Responses, however, from the following interested parties were received:

- Merino Panel Products Ltd;
- Green Ply Industries Ltd,
- Exim-Corp India Pvt Ltd.
- ARCL Organics Ltd.
- M/s Aggarwal Chemicals.

viii) Investigation was carried out for the period of investigation (POI) starting from 1st July, 2009 to 30th June, 2010. However, injury examination was conducted for the period starting from 2007-08 to the end of the POI.

ix) Request was made to the Director General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S), Kolkata, to arrange details of imports of subject goods in India for the period of investigation and the preceding three years. Information was received from the DGCI&S.

x) The Authority provided copies of the non-confidential version of the application to the known producers /exporters and the Embassy of the subject country in accordance with Rules 6(3) supra. A copy of the non-confidential application was also made available to other interested parties, wherever requested.

xi) Response to the Initiation Notification was received from the following:

- LG Chem Korea RP (Producer/Exporter)
- M/s Kumho P&B Chemicals, Inc, Korea RP (Producer)
- M/s Humade Corporation, Korea RP (Exporter)
- M/s Chemoil Corporation, Korea RP (Exporter)
- M/s Merino Panel Products Ltd (Importer)
- M/s Green Ply Industries Ltd (Importer)
- M/s Exim-Corp India Pvt Ltd (Importer)
- M/s ARCL Organics Ltd (Importer)

- M/s Agarwal Chemicals (Importer)

- xii) The Authority held an oral hearing on 8th March, 2011 to provide an opportunity to the interested parties to present relevant information orally in accordance to Rule 6 (6). The parties who attended the oral hearing were advised to file written submissions of the information presented orally. The interested parties were allowed to present rejoinders on the views/information presented by the other interested parties. The Authority has considered submissions received from the interested parties appropriately.
- xiii) The Authority, during the course of investigation, satisfied itself as to the adequacy and accuracy of the information supplied.
- xiv) The Authority conducted on-the-spot verification of the domestic industry and producers/exporters to the extent considered relevant and necessary. Additional/supplementary details regarding injury were sought from the domestic industry, which were also received.
- xv) The Authority made available non-confidential version of the evidence presented by the interested parties through a public file maintained by the Authority and kept open for inspection by the interested parties as per Rule 6(7) of the Rules.
- xvi) Cost investigations were conducted to determine non-injurious price based on the cost of production of the subject goods in India on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) to ascertain if anti-dumping duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury to the domestic industry or that the domestic injury will not face any injury in the event of revocation of duty.
- xvii) Wherever an interested party has refused access to, or has otherwise not provided necessary information during the course of the present investigations, or has significantly impeded the investigation, the Authority has recorded its analysis on the basis of the facts available.
- xviii) Information provided by the interested parties on confidential basis was examined with regard to the sufficiency of the confidentiality claim. On being satisfied, the Authority has granted confidentiality, wherever warranted, and such information has been considered confidential and not disclosed to the other interested parties. Parties providing information on confidential basis were directed to provide sufficient non-confidential version of the information filed on confidential basis.
- xix) In accordance with Rule 16 of the Rules supra, the essential facts/basis considered for these Findings were disclosed to the known interested parties and comments received on the same

have been considered in Final Findings. The following interested parties submitted their response to the disclosure statement and their submissions have been dealt in the appropriate headings of the final finding.:

1. Merino Panel Products Ltd
2. Green Ply Industries Ltd
3. Exim-corp India Private Ltd
4. ARCL Organics Ltd,
5. Agarwal Chemicals
6. Federation of Indian Plywood & Panel Industry
7. HOCL, the Domestic Industry
8. LG Chem Ltd. Korea RP
9. Kumho Petrochemicals, Korea RP

xx) *** in this Final Findings Notification represents information furnished by the interested parties on confidential basis and so considered by the Authority under the Rules.

C. PRODUCT UNDER CONSIDERATION AND LIKE ARTICLE

5. Under Rule 2(d) of the Anti-dumping Rules, like article means an article, which is identical and alike in all respects to the product under investigation or in the absence of such an article, another article having characteristics closely resembling those of the article under examination.

C.1 Views of the Domestic Industry

6. The product involved in the original investigation, and in the present midterm review investigation is Phenol. The product under consideration in the present midterm review is the same as has been held by the Designated Authority in the previous investigations.

C.2 Views of the Importers, Consumers, Exporters and Other Interested Parties

7. None of the importers, consumers, exporters and other interested parties have filed any comment or submissions with regard to the product under consideration and the like articles.

C.3 Examination by the Authority

8. The Authority notes that Product under Consideration, as in the original investigation and also in the present review application is Phenol. Phenol is a basic organic chemical normally classified under Chapter 29 of the Customs Tariff Act. However, imports are reported under

Chapter 27 also. The product is classifiable under Customs Tariff heading no. 2907.11 and 2707.60. The Customs classifications are, however, indicative only and in no way binding on the scope of the present investigation. As per the original investigation carried out by the Designated Authority, the product has been defined as under:

"Phenol, is a basic organic chemical normally classified under Chapter 29 of the Customs Tariff Act. The product is classifiable under Customs Tariff heading no. 2907.11. The product is marketed in two grades Crystalline and Hydrated. The two grades are differentiated on the basis of flow characteristics of Phenol. The product is marketed in two forms - loose and packed. Loose sales are normally in bulk, whereas packed consignments can be of much smaller container loads. Phenol is used in the manufacture of Phenol formaldehyde Resins, Laminates, Plywood, Particle Boards, Bisphenol-A Alkyl Phenols Pharmaceuticals, Diphenyl Oxide etc."

9. There is no comment from any party with regard to scope of the product under consideration. The present investigation is a midterm review investigation. The scope of the product under consideration in the present investigation is, therefore, the same as in the original investigation. The Authority concludes that there is no difference in Phenol produced by the domestic industry and imported from the subject country. Phenol produced by the domestic industry and imported from subject countries are comparable in terms of characteristics such as physical & chemical characteristics, manufacturing process & technology (followed by most of the producers world over), functions and uses, product specifications, pricing, distribution & marketing and tariff classification of the goods. The two are technically and commercially substitutable. The consumers have used the two interchangeably. Phenol produced by the petitioner is treated as like article to the subject goods imported from the subject country.

D. STANDING OF THE DOMESTIC INDUSTRY

10. With regard to the standing of the domestic industry, Rule 2(b) states as under:

"Domestic Industry" means the domestic producers as a whole engaged in the manufacture of the like article and any activity connected therewith or those whose collective output of the said article constitutes a major proportion of the total domestic production of that article except when such producers are related to the exporters or importers of the alleged dumped article or are themselves importers thereof in which case such producers shall be deemed not to form part of domestic industry

11. The present Mid-term Review investigation has been initiated based on an application filed by one of the exporters from Korea RP, namely, M/s LG Chem Ltd. Response to the Initiation of Mid-term Review investigation has been received from one of the domestic producers in India

namely M/s HOCL. M/s SI Group of India, another producer of Phenol in India, has supported the submissions made by HOCL. M/s HOCL submitted the costing and injury information in the form and manner of application proforma for domestic industry. As per the information made available by HOCL, it represents 52.10% of the total domestic sales in India. None of the interested parties has raised any issue with regard to the standing of the Domestic Industry. HOCL, therefore, is considered by the Designated Authority as the domestic industry under Rule 2(b) of the AD Rules.

E. OTHER ISSUES

Views of the Domestic Industry

12. Views expressed by the Domestic Industry are as under:
- a) Scope of the Mid-term Review is substantially different from scope of the Sunset Review.
 - b) There is no justification for the proposed premature withdrawal of anti dumping duty on imports of the subject goods from Korea RP. The Petitioner has provided no information to establish need for withdrawal. Submissions made by LG Chem Ltd. are unsubstantiated and do not justify any change in the duty whatsoever, leave aside premature withdrawal of anti dumping duty.
 - c) In a mid term review “no dumping” by the exporter in question is not sufficient for modification of the duty.
 - d) In order to examine whether the product is likely to be dumped by the exporter with the modification or withdrawal of the anti dumping duty, the Designated Authority is required to examine whether exporter is dumping goods to other countries.
 - e) The onus of establishing that there is a need for modification or withdrawal of anti dumping duty in force lies on the petitioner and not on the Domestic Industry.
 - f) Petitioner has claimed excessive confidentiality on various information filed before the Designated Authority.

Views of the Applicant and other interested parties (other exporters/importers/end users)

13. They have expressed their view as under:
- a. Normal value and basic raw material (Naphtha) prices have increased due to change in the exchange rate and prices of crude oil compared to the original investigation.

- b. Increase in export price of Phenol is much more than the increase in raw material prices due to imbalance in supply and demand of Phenol.
- c. Reduction in customs duty in India by 50% compared to the original investigation which reduced its impact on landed value and injury margin.
- d. Export price of LG Chem Ltd is much higher than the price in the home market.
- e. There is a significant increase in the sales price of the domestic industry when compared with the original period of investigation.
- f. Imports are necessary to bridge the gap between demand and supply.
- g. Domestic Industry is making bumper profits and is not adversely affected by imports from Korea RP.
- h. The review should cover all the countries from which the import of Phenol in to India is subject to anti-dumping duty rather than just one country, i.e., Korea RP, notwithstanding the absence of any formal requests from other sources in view of the overwhelming changes in circumstances making it incumbent upon DGAD to exercise its powers consistent with its obligations under the relevant Statute.
- i. The Review should cover the entire interregnum period, i.e., from 15th July 2007 to 30th June 2010 for both dumping and injury.
- j. The form of duty needs an urgent re-evaluation as the existing fixed specific rate of duty is not at all suited to the product under consideration.
- k. Imposition of antidumping duty violates the public interest. Phenol is an important key input in various products. There is a surge of imports in the products using Phenol, the interest of the user industry as well as the consumers should also be considered.
- l. There is a huge demand supply gap. Domestic Industry enjoys a monopoly position in the market. Laminate, plywood, particle board users are under small scale businesses and therefore they cannot file application for imposition of ADD on final product. The small scale industries will be finished if the anti dumping measure is not revoked.
- m. Excessive confidentiality shall not be granted to the data presented by the domestic industry. In all the determinations where the duty has been recommended on variable basis, normal value has been disclosed and notified, the same should be done in the instant case, particularly when the normal value is the constructed normal value, the basis whereof is fully discussed in the same finding without disclosing the numbers.
- n. DGAD shall keep in mind the interests of general public while recommending the duties.

- o. Constructed normal value should not be from Cumene, which is an intermediate product, but should be from benzene and propylene.
- p. Injury examination should be made by considering cost of Cumene transfer to Phenol on cost basis. If the methodology should be changed, then the Authority should give opportunity to comments.
- q. NIP should be calculated according to the latest amendment. Market price of Cumene is required and not the cost in factory, which is after adding basic customs duty.

Comments on Non-Injurious Price & Injury Margin

Comments of the Domestic Industry

14. The Domestic Industry has submitted as under:
 - a. Comparison of non injurious price with net sales realization is wholly irrelevant in a Mid Term Review.
 - b. The non injurious price is required to be determined considering gross fixed assets and that too at current market values. The original plant of the domestic industry is already fully depreciated. It cannot be expected that the domestic industry should earn no profits and merely because the investments are fully depreciated in the books. In fact, the domestic industry is entitled to profits on the basis of the present market value of these investments.
 - c. The present case is the fittest case for reviewing the methodology of non injurious price determination on the basis of net fixed assets. The domestic industry requests the Authority to verify its books of accounts, which would show that original investments in Phenol plant are already fully depreciated.
 - d. There may be no or low imports of cumene in this period. Should the Authority consider it appropriate to construct cumene price, the domestic industry submits that following expenses need to be added to determine the market price of cumene. It is important to point out in this regard that no business entity can buy material without incurring these expenses:
 - Ocean Freight (if price is FOB)
 - Marine insurance (if price is FOB)
 - Customs Duty
 - Cess on customs duty
 - Port Expenses

- Terminal handing charges
 - Bank Commission
 - Commission
 - Inland Freight from port to plant
 - Storage expenses
 - Working capital investment
- e. The Designated Authority has, in fact, considered gross fixed assets as the basis for determination of profits in the past. The decision was after due consideration and was applied for quite some time, and thereafter modified for no reasons publicly known.
- f. The non injurious price should include following expenses:
- i. Indian freight from factory to extended warehouse within the country.
 - ii. End period quantity discounts — the mere fact that this expense is discount should not imply that the same should be excluded for non injurious price determination. While it may be appropriate to deduct on invoice discounts as these are discounts given at the time of sale; off invoice discounts given as a matter of sales policies are end period discounts and have no relevance to import competition and, therefore, must not be deducted.
 - iii. Cash discounts

Views of other interested parties (importers and end users)

15. Other interested parties have submitted that Non injurious price should be calculated as per Customs Notification No. 15/2011-Customs (N.T) dated 1st March, 2011.

Examination by the Authority

16. Issues raised by the Exporters, Domestic Industry, Importers and other interested parties have been considered by the Designated Authority appropriately in the Final Finding. The Authority notes that determination of Non-injurious Price and the application of lesser duty Rule is governed by Annexure III to the Anti Dumping Rules. The Authority has computed the Non-Injurious Price based on the information submitted by the Domestic Industry and in accordance with the consistent practice of the Authority and in accordance with the Anti Dumping Rules. Details of computation of Non-Injurious Price were enumerated in Annexure IV of the Disclosure Statement.

Post Disclosure Statement submissions by interested parties**Submissions by the Domestic Industry:**

17. Following submissions to the Disclosure Statement have been made by the Domestic Industry:

- a) The disclosure statement does not deal with likelihood of dumping. A mere claim of no dumping during review period is insufficient in a Midterm Review.
- b) The responding exporters have given no material to the Designated Authority to determine likelihood of dumping.
- c) The Designated Authority has not determined likelihood of dumping considering the exports of exporters in third countries.
- d) Information on transaction wise exports to third countries has not been provided by any responding exporters/producers.
- e) The Designated Authority should consider performance upto the most recent period to come to a conclusion that the situation prevailing during the investigation period was of lasting nature.
- f) The injury margin determined ignores of the submissions made by the domestic industry with regard to (i) non injurious price determination, (ii) fair comparison between import price and domestic industry's target/desired prices.
- g) Considering the non injurious price determined by the authority for the investigation period and subsequent increase in the raw material prices, the non injurious price of the domestic industry at present is much below the landed price of imports.
- h) The domestic industry disputes the contention of the exporters and observation of the authority with regard to likelihood. Threat of injury is different from likelihood of injury.
- i) The Designated Authority should consider performance upto the most recent period to come to a conclusion that the situation prevailing during the investigation period was of lasting nature. Mere improvement in performance during investigation period is grossly insufficient to conclude about likelihood.
- j) It is evident from the Disclosure Statement that the producers have not given full information to the Authority in this regard and yet dumping margins have been determined.

- k) The difference between the non injurious price and net sales realization is immaterial in a midterm review investigations.
- l) Volume of exports made by the exporter is insignificant compared to production and consumption in India.

Submissions by the Other Interested Parties (Exporters/producers/importers/users):

18. Submissions by the other Interested Parties on the Disclosure Statement are as follows:

- a) DGAD has already recommended discontinuance of anti-dumping duty in mid-term review on the subject product imported from USA and Taiwan on 9th February 2012. In both the MTR investigations, the period of review are overlapping. Thus, it may reasonably be concluded that performance of the domestic industry would be similar. Since DGAD has already recently held that the domestic industry is no longer suffering any injury, there exists no reason to recommend continuance of antidumping duty in the present review investigation also.
- b) Further, DGAD is requested to disclose the normal value and actual margin of dumping both in US\$ and Indian Rupee terms for both injury period and period of investigation.
- c) As regards determination of injury, we accept the finding of DGAD and request it to confirm the same in the final findings.
- d) We agree with the finding of DGAD as regards the causal link analysis and request DGAD to confirm the same in the final findings.
- e) We agree with the determination of DGAD that there is no possibility of recurrence of injury to the domestic industry and request DGAD to confirm the same in the final finding.
- f) Absence of any existing injury as well as likelihood of injury to the domestic industry, we request DGAD to recommend discontinuance of anti-dumping duty imposed on Phenol.
- g) Export prices from Korea RP beyond the POI of the present MTR are much higher than the export prices from Taiwan. POI of MTR investigation carried out by the DA in respect of exports from Taiwan is similar to the POI of the present MTR. If the DA has concluded that exports from Taiwan are not likely to cause injury to the domestic industry, the same conclusion should be drawn in the present MTR.
- h) Surge in prices in the international market for Phenol is more on account of vacuum in supplies rather than occasional. Surge in demand will outpace the new capacities underway and the trend is unlikely to reverse in mid-long term. Indian imports account for one percent of global production. Trends in pricing in India when compared to other third countries will always demonstrate lesser significance of Indian Market in global scenario.

Examination by the Authority

19. Submissions made by the interested parties have been examined by the Authority in terms of relevant provisions of the Anti-Dumping Rules. With regards to the post disclosure submission by the domestic industry, the Authority notes that the same have been dealt with in these Final Findings under appropriate paras. The Authority has also examined the likelihood of injury to the domestic industry based on all the relevant parameters. The Authority notes that transaction wise details of exports to third countries was provided by the cooperating exporters. Further, the Authority has obtained relevant information from the Exporters for one year beyond the POI to examine likelihood of injury to the Domestic Industry. Likelihood of injury has been appropriately examined in detail by the Authority in the relevant paras of this Final Findings Notification. The Authority further notes that the NSR of the domestic industry has been consistently found to be higher than the NIP, both in the POI and in the post POI period. With regard to the views made by importers, users and exporters, it is noted that imports of the subject goods by countries attracting anti dumping duties are mentioned in the injury determination.

F. ASSESSMENT OF DUMPING – METHODOLOGY AND PARAMETERS**Dumping Margin****Views of the Domestic Industry**

20. The following are the submissions made by the Domestic Industry with regard to the dumping margin:
- a. The product continues to be exported at dumped prices.
 - b. Entire purpose of review inquiry was not to see whether there was a need for imposition of anti-dumping duty but to see whether in the absence of such continuance, dumping would increase and the domestic industry suffer
 - c. In a midterm review investigation, it is insufficient for the exporter to establish that the product was not being dumped in the present review period. The exporter is required to establish that there was no dumping and there was no likelihood of dumping of the product in the event of modification or withdrawal of anti dumping duties.
 - d. The exporter is required to establish that there is no likelihood of injury in the event of modification or withdrawal of anti dumping duties.
 - e. Under Rule 23, there are three tests that are required to be considered by the Designated Authority:
 - i. identification of the specific factors which would constitute sufficient “changed circumstances” to warrant a review;

- ii. the dumping and/or injury would be unlikely to continue or recur if the measures were removed or varied, i.e., a possibility of “no injury” in case of discontinuance of the anti-dumping duty needs to be established.
 - iii. whether because of the existing measures, the domestic industry has been able to offset injury and counteract dumping which was causing injury or the duty is no longer sufficient to counteract dumping which is causing injury.
- f. It has been claimed by the applicant that normal value has declined and export price has increased. However, this does not mean that there is no dumping. It is not even claimed by the petitioner herein that (a) the product is no longer being dumped and (b) it is unlikely that the dumping would continue or recur if the duties were modified or withdrawn. Nor there is any positive evidence provided in this regard.
 - g. No dumping in review period is not sufficient to modify or withdraw the duty.
 - h. Onus of establishing need for withdrawal is on the applicant.
 - i. Phenol has been exported from South Korea at prices below normal value, thus resulting in continued dumping.
 - j. The dumping margin is significantly higher if Korean export data is adopted.
 - k. Exports from Korea RP to third countries clearly shows that (a) such exports are at prices significantly lower than export price from Korea RP to India (which further establishes that export price to India are unreliable and must be rejected), and (b) significantly higher dumping in respect of these exports to third countries. This clearly establishes likelihood of significant dumping in the event of premature withdrawal of anti dumping duty.

Views of other interested parties (exporters, importers and end users)

21. Other interested parties have submitted as under:

- a. The dumping margin should be reexamined in review investigations as combined reading of Article 9.2 and 9.3 suggests that if the amount of anti dumping duty levied is in excess to the margin of dumping, then it cannot be termed as ‘appropriate’.
- b. The provisions of AD Agreement, Customs Tariff Act and the Rules framed therein have clearly provided for re determination of dumping margin in a review investigation.
- c. Actual dumping margin should be calculated for the entire period so that the refund contemplated under Section 9AA could be sought under relevant provision. Importers are unable to prefer a formal quantified claim for refunds due to the absence of actual dumping margin.
- d. Anti dumping duty by reference to difference between the normal value and landed cost, subject to a maximum of dumping or injury margin, should be imposed.

- e. Section 9AA as amended by Finance Bill 2011, envisages determination of actual margin of dumping with respect to each import which is possible if the mechanism of variable duty being difference of specified normal value and the landed cost is in place.
- f. Usage of constructed cost methodology by applying an unspecified rate of return on capital employed is inappropriate when the corresponding normal value in the ordinary course of international trade is available on the published reports of ICIS-LOR.
- g. Kumho are fully cooperating and are entitled to respective combination determinations.
- h. Due to volatility in prices during the period of investigation, monthly information and dumping margin has been submitted.
- i. The two transactions by Kumho are representative for dumping margin determination as per the established practices and precedents of the Authority. Alternatively, the Authority may exclude both spot market sales and packaged sales from the scope of any AD duty as the prices are higher than in case of long term bulk sales and the volumes are lower and thus cannot cause injury.
- j. Domestic Industry's argument that the differences between the third country export price and the export price to India were doctored is totally unfounded assumption as no evidence adduced to suggest that export to third country and India were made at same level of trade, no evidence to affirm that the export prices to India were non commissionable and on same set of terms and conditions of business, no evidence to demonstrate that the export prices to other third countries were not bounden by the long term contract and how does an importer get help in the specific fixed duty regime to cause an overstatement in the import price.

Examination by the Authority

Normal Value

22. The Authority sent questionnaire to the known exporters from subject country advising them to provide information in the form and manner prescribed. In response to the same, the

following producers and exporters have submitted Exporters Questionnaire and requested the Authority to base their dumping margin determination on the basis of their Questionnaire response.

- a) M/s LG Chem, Korea RP
- b) M/s. Kumho P&B Chemicals, Inc, Korea RP

M/s. Kumho P&B Chemicals Inc is a producer of the subject goods and has exported the subject goods through two traders, namely, M/s Humade Co. Korea RP and M/s Chemoil Co. Korea RP. Both the traders have also filed Questionnaire Response and requested that they may be granted individual treatment.

General methodology followed for the responding exporters for determination of Normal Value

23. It has been contended by the Domestic Industry that there had been volatility of the prices of the subject goods during the Period of Investigation. The Authority has, therefore, done a month-wise analysis of the entire data for the determination of dumping. Necessary data from the cooperating producers/exporters was called for undertaking the analysis on a month-wise basis which was submitted, and Dumping Margin has been assessed on monthly basis.

24. The Authority has assessed the Normal Value based on the information submitted by the exporters and in accordance with the Rules. It was first seen as to whether the domestic sales of the subject goods by the responding exporters/producers in their home markets were representative and viable for permitting determination of Normal Values on the basis of their domestic selling prices and whether the ordinary course of trade test was satisfied as per the data provided by the respondents on monthly basis. In their responses, the respondents have provided transaction-wise details of sales made in their home markets. The information so provided has been relied upon to determine separate weighted average domestic selling price for the subject goods. For the determination of the ordinary course of the trade test, the costs of production of the product concerned have been accepted as found and verified during the on-the-spot verification. Further, all domestic sales transactions were examined with reference to the costs of production of the subject goods to determine whether the domestic sales were in the ordinary course of trade. It was also seen whether the loss-making transactions account for over 20% of the sales or not. Wherever the profitable domestic sales transactions were found to be

accounting for more than 80% of the total sales, the weighted average price of the domestic sales have been taken into consideration for each month. However, wherever the profitable sales volume were found to be less than 80%, the weighted average price of the profitable domestic sales has been taken into consideration.

Normal Value for M/s LG Chem Ltd, Korea RP

25. Response filed by the company was examined in detail. The exporter was asked to submit month wise cost data for the subject goods which was submitted. After analysing the data, the Authority notes that the domestic sales meet the sufficiency test. Further, the monthly cost of production of the subject goods as indicated in Appendix-8B of the response has been verified during the on-the-spot verification for the purposes of carrying out the ordinary course of trade test. Adjustments thereof have been allowed as noted and verified during the on-the-spot verification. Based on such a determination, the weighted average Normal Value for the period of investigation, (based on month wise analysis of the domestic sales and cost data), has been determined.

Normal Value for M/s Kumho P&B Chemicals, Korea RP

26. Response filed by the company was perused. The exporter was asked to submit month wise cost data for the subject goods which was submitted. After analysing the data, the Authority notes that the domestic sales meet the sufficiency test. Further, the monthly cost of production of the subject goods as indicated in Appendix-8B of the response has been verified during the on-the-spot verification for the purposes of carrying out the ordinary course of trade test. Adjustments thereof have been allowed as noted and verified during the on-the-spot verification. Based on such a determination, the weighted average Normal Value for the period of investigation, (based on month wise analysis of the domestic sales and cost data), has been determined.

Export Price

27. The Authority has examined the export prices in respect of responding exporters as claimed in the Questionnaire responses filed by them. The export prices and the adjustments thereof have been allowed as noted and verified during on-the-spot verification.

Export Price for M/s LG Chem Ltd., Korea RP

28. The respondent has furnished information in Appendix 2 relating to exports of the subject goods to India. The subject goods have been exported directly by LG Chem to India on FOB basis. Adjustments on account of Bank Charges, Export Inspection Fee and credit expenses have been allowed as noted during the on-the-spot verification. Based on such a determination, the weighted average ex-factory Export Price, based on month wise analysis of the data, has been determined.

Export Price for M/s Kumho P&B Chemicals Inc

29. During the period of investigation, M/s Kumho P&B Chemicals Inc, producer of the subject goods has exported subject goods through two traders, namely, M/s Humade Co and M/s Chemoil Co, both located in Korea RP. Both the traders have cooperated and filed the responses and the information submitted by the traders has been duly verified. The traders have furnished information in Appendix 2 relating to exports to India. The adjustments on account of packing cost, inland freight, handling charge, ocean freight, marine insurance, handling, custom brokerage, commission, credit expenses, bank charges and duty drawback have been allowed as noted and verified during the on-the-spot verification. Based on such a determination, the weighted average ex factory Export Price, based on month wise analysis of the data, for exports made by Kumho P&B Chemicals through M/s Humade Co and for exports made by Kumho P&B Chemicals through M/s Chemoil Co has been worked out.

Determination of Normal Value & Export Price in respect of Non-co-operative Exporters/Producers

30. Since no other response has been received from any other producer/exporter of the subject goods, the Authority has determined the Normal Value and Export Price for them as per facts available in terms of Rule 6(8) of the Anti Dumping Rules. Accordingly, the weighted average normal value and export price for non-co-operative Exporters/Producers has been determined based on data provided by the applicant and other cooperating exporter.

31. Considering the Normal values and Export prices as determined above, the dumping margins have been determined as follows:

Dumping Margin

US\$ per MT					
Sl. No.	Country -Producer/Exporter	Normal Value	Export Price	Dumping Margin	Dumping Margin %
	Korea RP				
1	M/s LG Chem Ltd.	****	****	****	-3.16
2	Phenol produced by M/s Kumho P&B Chemicals Inc and exported by M/s Humade Co. Korea RP	****	****	****	0.90
3	Phenol produced by M/s Kumho P&B Chemicals Inc and exported by M/s Chemoil Co. Korea RP	****	****	****	-3.84
4	All other producers and Exporters from Korea RP.	****	****	****	5.55

G. ASSESSMENT OF INJURY AND DETERMINATION OF CAUSAL LINK**Assessment of Injury and likelihood of injury to continue or recur****Submissions by the Exporters**

32. Exporters (M/s LG Chem Ltd & Kumho P & B) has submitted as under:

- i. Export price to third countries by Korea RP cannot be considered for examining the 'likelihood test'. There is no basis in law for considering such data in an MTR.
- ii. Assuming but not conceding likelihood of dumping, it is not sufficient as there should be 'likelihood of dumping causing injury' and not likelihood of dumping alone.
- iii. Current prices of Phenol in India as well as in the global markets are far higher than what prevailed during the period of investigation. There is an increase of more than 51% in the selling price of the Domestic Industry as compared to the period of investigation. Therefore, there is no need for continuation of ADD.
- iv. Domestic Industry referred to some previous finding of CESTAT on recurrence of injury. The facts in this case are quite different, i.e., (i) Domestic industry is earning super profit, (ii) capacity of Domestic industry is less than the demand and (iii) small scale is also consuming this product. Therefore with imposition of duty, can the small scale industry survive?
- v. Export price to India has been higher than those to third countries.
- vi. Assertion of likelihood is vexatious. Even if DI's argument is accepted, the reference price based levy of duty is required.
- vii. India is not a focused market of Kumho. It had over 6% growth in the past year. Therefore, there is no threat of injury by Kumho.
- viii. No participation of SI Group India Limited in the DI's response. In the absence of injury data of SI Group, the DA is unable to comply with the requirement of Rule 11 of the Anti Dumping Rules. It is most likely that it has not faced any injury and therefore, refrained from participating in the investigation with relevant data.

- ix. Domestic producer had consistently improved in its volume of production, sales, showing that imports have not affected the prices in the domestic market for the like article.
- x. Increase in price of raw material, i.e., benzene is just 17% as compared to 35% increase in selling price.
- xi. The capability of manufacture to earn a reasonable return has been largely affected by global competition and tightening of parameters like rationalized duty structure and strict quality controls.
- xii. ADD should be applied on reference price basis in this case.
- xiii. DI accepted at the public hearing that the landed prices are more than the prices selling price, which negates the existence of causal link, as held by the Tribunal in the matter of Acrylic Fibre vs. D.A and Jindal Stainless Ltd vs. D.A.
- xiv. Performance of DI shows positive trend in most parameters such as production, capacity utilization, sales volume, selling price, profits. Return on capital investment and cash profit.
- xv. DI did not plan to produce optimum capacity for the period. Therefore, lower capacity utilization cannot be blamed on dumping.
- xvi. Argument that NIP should be determined by including the expenses such as inland freight from factory to extended warehouse, and quantity discounts, cash counts should be rejected as the calculation of NIP must be done according to clause vii (b) of para 4 of the Annexure III which states that NIP is determined at ex-factory level.
- xvii. Increase in export price by almost 84% whereas the main raw material has increased by only 17%.
- xviii. There is an increase in export price and no change in normal value. Therefore, dumping is negative.
- xix. Globally, (including for HOCL), the prices of phenol has doubled when compared to the POI of the original investigation.
- xx. ROCE increased from 22.92% for POI in the original investigation to 112.68%. No adverse impact on DI. Consequently, no harm would be caused to DI with the revocation of the ADD.
- xxi. Capacity utilization of Domestic Industry has increased from 86% to 104%, which means it has utilized its plant more than the capacity.

- xxii. Production and Sales volume has increased significantly.
- xxiii. Benzene cost has increased by Rs. 8000 PMT and the selling price has increased to Rs. 45000 PMT. This shows that contribution of DI has increased to almost Rs. 37000 PMT.
- xxiv. Profit of the Domestic Industry has increased significantly over the period of injury.
- xxv. Capacity utilization and volume of sales of domestic industry has increased.
- xxvi. Domestic selling price of the product has increased significantly as compared to the rise in the price of the raw material, benzene. (benzene is used to produce cumene, therefore the amounts have so been adjusted).
- xxvii. Domestic Industry's demand of adding and including certain added expenses like cost of transportation should be considered on equitable basis by applying the same principle in arriving at the landed price on the same level of trade.

Submissions by the domestic industry

33. The domestic industry has argued that:

- i. The difference between non injurious price and net sales realization is immaterial in a midterm review investigations as has been held by the Authority in a number of cases. Anti dumping duties have been extended in various SSR cases where non injurious price was lower than net sales realization. In the present case, it is only a midterm review and, therefore, the objective is extremely limited.
- ii. Performance of the domestic industry has improved as a result of imposition of anti dumping duties. But it has not fully recovered back to a situation which was established before dumping started.
- iii. The current import price from Korea RP is unreliable. Thus, prices undercutting, underselling and injury margin based on such prices would clearly be flawed.
- iv. Even if it is assumed that the domestic industry is no longer suffering injury, the same is grossly insufficient for premature withdrawal of anti dumping duty as it must be established that no injury is likely to occur in the event of withdrawal of anti dumping duty.
- v. The non injurious price is required to be determined considering gross fixed assets and that too at current market values.
- vi. Performance of the domestic industry has improved as a result of imposition of anti dumping duties. Parameters such as production, capacity utilization, sales volume, selling price, profits, return on investment, cash profit have shown improvement as compared with the dumping period. However, (a) this improvement is over the dumping, and (b)

performance is still adverse as compared to 2007-08 (pre-dumping period). In other words, the domestic industry has not fully recovered back to a situation which was established before dumping started.

- vii. Assuming though not admitting that domestic industry is no longer suffering injury, the same is grossly insufficient for premature withdrawal of anti dumping duty. At the stage of Mid Term Review, the interested parties seeking revocation of anti dumping duty must establish "no injury to domestic industry is likely" in the event of withdrawal of anti dumping duty.
- viii. The obligation of establishing "no likelihood of injury" is not on the domestic industry. It is on the petitioner before the Designated Authority. The Authority is not required to determine the "justification for continuation". "Justification for continuation" is different from "justification for withdrawal".
- ix. The price at which Korea has exported the product to third countries clearly establishes that if goods were to be exported to India during this period at these prices, the resultant imports would have resulted in significant price undercutting and underselling. The resultant injury margin would also have been significantly positive.
- x. Weighted average import price into India from third countries clearly establishes significant price undercutting, price underselling and positive injury margin. Should the Korean producers have sold the product at prices comparable to third countries, the resultant imports would have caused significant injury in terms of price undercutting and positive injury margin.
- xi. Significant exports from Korea to various global markets, significant surplus capacities in the global market and fresh additions to the capacity in the foreseeable near future clearly establish existence of significant freely disburseable production capacities.
- xii. The non injurious price should include following expenses :
 - a. Indian freight from factory to extended warehouse within the country.
 - b. End period quantity discounts – the mere fact that this expense is "discount" should not imply that the same should be excluded for non injurious price determination. While it may be appropriate to deduct "on invoice" discounts as these are discounts given at the time of sale; "off invoice" discounts given as a matter of sales policies are end period discounts and have no relevance to import competition and therefore must not be deducted.
 - c. Cash discounts

Response from other interested parties (importers and users)

34. This is a case where falsity in the various statements claiming injury from alleged dumped imports before the DGAD has been proved beyond any reasonable doubt. Domestic Industry has committed the impropriety of misleading a quasi judicial Authority in arriving at its decisions at the severe cost of the public at large.

Examination by the Authority

35. The Authority has taken note of submissions made by the interested parties. Annexure II of the Anti Dumping Rules provides for objective examination of both (a) the volume of dumped imports and the effect of the dumped imports on prices in domestic market for the like articles; and (b) the consequent impact on domestic producers of such products. While examining the volume effect of the dumped imports, the Authority is required to examine whether there has been a significant increase in dumped imports either in absolute term or relative to production or consumption in India. With regard to price effect of dumped imports, the Authority is required to examine whether there has been significant price undercutting by the dumped imports as compared to price of the like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress the prices to a significant degree, or prevent price increase which would have otherwise occurred to a significant degree.

36. As regards the impact of dumped imports on the domestic industry, Para (iv) of Annexure-II of AD Rules states as follows: *"The examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry concerned, shall include an evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the industry, including natural and potential decline in sales, profits, output, market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting domestic prices, the magnitude of the margin of dumping; actual and potential negative effects on cash flow, inventories, employment, wages, growth, ability to raise capital investments."*

37. The Authority has examined the injury parameters objectively taking into account the facts and arguments of the interested parties. For analyzing the injury parameters, all relevant documents including the audited balance sheets of both the producers have been examined and verified by the Authority. The Authority also examined the audited accounts of the domestic industry. The issues relating to the interest of the Indian industry and other issues have been dealt by the Authority under appropriate headings. On the issue of consumers becoming non competitive on account of levy of anti dumping duty and the impact of anti dumping duty on end product, it is noted that the question of consumers becoming non-competing on account of levy of anti dumping duty on subject goods does not arise, particularly when the quantum of anti-dumping duty is restricted to lower of the dumping margin and the injury margin. Further, it is recognized that the imposition of anti-dumping duties might affect the price levels of the products manufactured using the subject goods and consequently might have some influence on relative competitiveness of these products. However, fair competition in the Indian market will not be reduced by the antidumping measures, particularly if the levy of the anti-dumping duty is restricted to an amount necessary to redress the injury to the domestic industry. On the contrary, imposition of anti-dumping measures would remove the unfair advantages gained by dumping practices, would prevent the decline of the domestic industry and help maintain availability of wider choice to the consumers of the subject goods.

Demand, Imports & Market Share of the Domestic Industry

38. In the present investigation petitioner and the Domestic Industry submitted the import data based on secondary sources i.e. DGCIS, IBIS and also from Korean Customs (KITA) and apart from the exporters own data. The Authority also addressed a communication to the office of DGCIS calling for the required information. The authority notes that for the POI, there are significant variances in the volume of imports as reflected in the Exporters data for the POI and the data made available by DGCIS. The authority further notes that the exporters from the subject country (Korea RP) have submitted detailing individual responses on the quantum of exports where along with the supporting documents. The exporters from the Korea have substantiated the volume and price of exports based on their data. The authority for the present investigation has considered the import data based on DGCIS from all subject countries except Korea RP. However, in case of Korea RP, since the volume of exports are noted to be lower in the DGCIS, compared to the admitted volume of exports from Korea RP, the Authority has considered the exports based on the data as evidenced by Korea RP customs which correlates well with the volume reported by the exporters in their response. Based on the above, the volume of exports from the subject countries along with the share of domestic industry in the total demand is detailed below:

Particulars	Units	2007-08	2008-09	2009-10	POI
Sales of HOCL	MT	43,723	40,924	37,671	40,214
Sale of SI Industries	MT	29247	31451	31958	36,969
Total Sales of Indian Domestic Producers	MT	72,970	72,375	69,629	77,183
Trend	%	100	99	95	106
Subject Country-Imports*	MT	5,805	144	32	1,593
Trend	%	100	2	1	27
Other Countries	MT	94,617	90,004	100,058	95087
Total Imports in India	MT	100422	90148	100090	96680
Trend	%	100	90	100	96

Total Demand in India	MT	173392	162523	169719	173863
Trend	%	100	94	98	100

Imports in relation to various parameters

39. The Authority has analysed the trend of the subject imports in relation to production and consumption in India. It is noted that imports of the subject goods from subject country decreased in relation to total imports as well as total demand of the like product in India during the injury period. Further, this has also decreased in relation to consumption as well as sales of the domestic industry in India as can be seen in the table below:

Particulars	Units	2007-08	2008-09	2009-10	July,09- June,2010 (POI)
Imports from Korea RP	MT	5,805	144	32	1,595
<i>Trend</i>		100	2	1	27
Total Imports	MT	100422	90148	100090	96680
<i>Trend</i>		100	94	98	100
Demand in India	MT	173392	162523	169719	173863
<i>Trend</i>		100	94	98	100
Sales of Indian Producers	MT	72,970	72,375	69,629	77,183
<i>Trend</i>		100	99	95	106
Imports from Korea as % of demand	%	3.35	0.09	0.02	0.92
Share of Indian producers in demand	%	42.08	44.53	41.03	44.39
Share of total imports in demand	%	57.92	55.47	58.97	55.61

40 The Authority has determined the market share of the domestic industry by taking into account the total demand of the subject goods and sales of the Indian industry. It is noted from the table above that the market share of the Indian producers declined in 2009-10 but slightly increased during the POI as compared to the base year, while at the same time market share of subject goods from Korea RP has decreased by 73%.

Production, Capacity & Capacity Utilization

41. It is noted from the table below that the production of the Domestic Industry has decreased only by 1% in the POI as compared to the base year. However, the capacity utilization during the POI was 104%. Further, it is noted that the demand for the product has not increased in the same period.

Particulars	Units	2007-08	2008-09	2009-10	July09- June2010
Capacity	MT	40,000	40,000	40,000	40,000
Production	MT	41,908	42,641	36,751	41,543
Trend		100	102	88	99

Profitability

42. The profitability of the domestic industry in respect of the subject goods has been examined only in respect of the domestic sales. It is seen that profitability of the domestic industry for the subject goods decreased during 2008-09 and 2009-10 as compared to 2007-08 but increased significantly during the POI.

Particulars	Units	2007-08	2008-09	2009-10	July09- June2010
Cost of Sales	Rs./MT	****	****	****	****
Trend	Index	100	101	102	104
Net Sales Realization	Rs./MT	****	****	****	****
Trend	Index	100	92	92	103
Profit/Loss	Rs./MT	****	****	****	****
Trend	Index	100	33	30	99
Profit before tax	Rs. Lacs	****	****	****	****
Trend	Index	100	27	26	78

Employment and Wages

43. No significant trends of change in the no. of employees during the POI and the injury period have been noted. However, the wages costs of the company have increased on an overall bases as well as in terms of wages per employee.

Particulars	Units	2007-08	2008-09	2009-10	July09- June2010
Number of employees	No	****	****	****	****
Trends	Indexed	100	94	94	109
Wages	Rs. Lacs	****	****	****	****
<i>Trend</i>	Indexed	100	102	105	113
Wage per employee	Rs. Lacs	****	****	****	****
<i>Trend</i>		100	108	111	104

Productivity

44. No significant trends of change have been noted in the productivity per day and the productivity per employee during the POI over the base year of the injury period.

Particulars	Units	2007-08	2008-09	2009-10	July09- June2010
Productivity per day	MT	****	****	****	****
<i>Indexed</i>	<i>Trend</i>	100	102	88	99
Productivity per Employee	MT	****	****	****	****
<i>Indexed</i>	<i>Trend</i>	100	102	88	99

574 55/12-10

Return on investments and cash flow

45. The return on investment has been determined considering profit before interest and tax and capital employed for the product. Impact on cash flow has been determined considering profit before depreciation but after interest cost. It is noted that return on capital employed has decreased during 2008-09 and 2009-10 as compared to 2007-08 but increased significantly afterward. During the POI, the ROCE was 50.30%.

Particulars	Units	2007-08	2008-09	2009-10	July09- June2010
Profit/Loss	Rs./MT	****	****	****	****
<i>Trend</i>	<i>Index</i>	100	33	30	99
Profit before tax	Rs. Lacs	****	****	****	****
<i>Trend</i>	<i>Index</i>	100	27	26	78
ROCE	%	****	****	****	****
<i>Indexed</i>	<i>Trend</i>	100	29	29	82
Cash Profit	Rs. Lacs	****	****	****	****
<i>Indexed</i>	<i>Trend</i>	100	23	24	79

Inventories

46. It is noted from the table below that the inventory level of domestic industry has declined in the POI as compared to the base year.

Particulars	Units	2007-08	2008-09	2009-10	July09- June2010
Opening	MT	2,307	492	2,209	461
Closing	MT	492	2,209	1,289	1,790
Average	MT	1,399	1,351	1,749	1,126
	<i>Index</i>	100	96.57	125.01	80.49

Growth

47. There is no addition in the capacity by the Domestic Industry which is operating at 104% during the POI. Number of employees has increased by about 9% as compared to POI. Productivity per day is stable during the POI as compared to the base year.

Ability to raise capital investments

48. No arguments have been put forward by the Domestic Industry with regard to its ability to raise capital investments. The Domestic Industry has not indicated any plans to expand the capacity. With the level of profitability attained by the Domestic Industry, it is evident that there should not be any adverse impact on the ability of the Domestic Industry to raise capital investments if so desired.

Level of dumping and dumping margin

49. As explained in Annexure II of the Disclosure Statement, in the case of M/s LG Chem Ltd, the dumping margin established in the foregoing paras is found to be negative in all the months of exports. In the case of exports by M/s KPB through Humade, the Dumping Margin is found to be positive whereas in the case of exports by M/s KPB through Chemoil, the same is negative. However, the Dumping Margin in the case of non cooperating exporter is assessed as positive.

Price effect of imports

50. With regard to the effect of the dumped imports on prices, it has been examined whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree. A comparison for the subject goods was made between the landed value of exported product and the average selling price of the domestic industry for domestic market net of all rebates and taxes, at the same level of trade. The prices of the domestic industry were determined at the ex factory level. This comparison showed that during the period of investigation, the subject goods originating in Korea RP were sold in the Indian market at prices which were higher than the domestic industry's prices. It is, thus, seen that imports were not undercutting the domestic prices and margin of undercutting is found to be negative during the injury period except 2009-10 as per the table below:-

Particulars	Unit	2007-08	2008-09	2009-10	July09- June2010
-------------	------	---------	---------	---------	---------------------

					(POI)
Landed Value from Korea RP	Rs./Kg	****	****	****	****
Net Sales Realization	Rs./Kg	****	****	****	****
Price Undercutting	Rs./Kg	****	****	****	****
Price Undercutting	%	-11.98	-28.20	31.56	-4.07
Price Undercutting	Range	Negative	Negative	Positive	Negative

51. The price undercutting with respect to cooperating exporters has been worked out by the Authority and these are as follows:

Sl.No	Producer	Exporter	Price undercutting	Price undercutting %
1	M/s LG Chem, Korea RP	M/s LG Chem, Korea RP	***	-6.68
2	M/s Kumho P&B Chemicals, Inc, Korea RP	M/s Humade Corp., Korea RP	***	14.83
3	M/s Kumho P&B Chemicals, Inc, Korea RP	M/s Chemoil Corp., Korea RP	***	-11.68
4	All other producers and exporters from Korea RP	All other producers and exporters from Korea RP	***	14.83

52. The Authority has also examined price depression, price suppression and price underselling, if any, suffered by the domestic industry on account of dumped imports from the subject country. After examination, the Authority notes that while in the year 2008-09 and 2009-10, the domestic industry was not able to increase its selling price in line with exchange in the cost of sales, but in the POI, the increase in selling price is marginally lower than the increase in the cost of production. The landed values of exports has increased in 2008-09 and decreased in 2009-10 and has again increased in the POI. The domestic industry has also not suffered any price suppression during the POI.

Particulars	Unit	2007-08	2008-09	2009-10	POI
Net Selling Price of Domestic Industry	Rs/MT	****	****	****	****
Indexed		100	92	92	103
Cost of Sales – Domestic	Rs/MT	****	****	****	****
Indexed		100	101	102	104
Landed Price	Rs/MT	78702	88637	48480	74580
Indexed		100	112.62	61.60	94.76

53. The Authority has determined non-injurious price for the domestic industry taking into consideration cost of production of the domestic industry. This non-injurious price of the domestic industry has been compared with the landed values of the subject imports to determine injury margin. The injury margin has been determined in line with the determination of dumping margins as mentioned in the appropriate heading. The injury margins have been worked out as follows:

Table showing Injury Margin (IM)

Producer	Exporter	IM	IM%
M/s LG Chem, Korea RP	M/s LG Chem, Korea RP	***	-14.46
M/s Kumho P&B Chemicals, Inc, Korea RP	M/s Humade Corp., Korea RP	***	1.23
M/s Kumho P&B Chemicals, Inc, Korea RP	M/s Chemoil Corp., Korea RP	***	-11.14
All other producers and exporters from Korea RP	All other producers and exporters from Korea RP	***	1.23

Likelihood of injury to continue or recur

54. The Authority has to determine as to whether the subject goods are continuing to enter the Indian market at dumped prices or are likely to be exported at dumped prices from the

subject countries in the event of withdrawal of anti dumping duties. It is pertinent to examine whether injury to the domestic industry is likely to recur due to these dumped imports if the duty is removed or varied. It has already been established that the actual landed value of imports from the subject countries to third countries were below the selling price of the domestic industry and the non injurious price determined for the domestic industry.

55. The Authority has also examined the likelihood of recurrence of injury to the domestic industry on the basis of information and evidence presented by the various interested parties during the course of the investigations. The Authority examined the likelihood of continuation or recurrence considering the parameters relating to the threat of material injury in terms of Annexure II (vii) of the Rules, which states as under:

"A determination of a threat of material injury shall be based on facts and not merely on allegation, conjecture or remote possibility. The change in circumstances, which would create a situation in which the dumping would cause injury, must be clearly foreseen and imminent. In making a determination regarding the existence of a threat of material injury, the Designated Authority shall consider, inter alia, such factors and;

- a. a significant rate of increase of dumped imports into India indicating the likelihood of substantially increased importation.*
- b. Sufficient freely disposable or an imminent, substantial increase in capacity of the exporter indicating the likelihood of substantially increased dumped exports to Indian market, taking into account the availability of other export markets to absorb any additional exports.*
- c. Whether imports are entering at prices that will have a significant depressing or suppressing effect on domestic prices, and would likely increase demand for further imports and,*
- d. Inventories of the article being investigated."*

Views of the Domestic Industry

56. The Domestic Industry has submitted as under:

- a. The applicant has not given any material along with their petition that there is no likelihood of dumping and injury. In a midterm review investigation, it is insufficient for the exporter to establish that the product was not being dumped in the present review period. The exporter is required to establish that there was no dumping and there was no likelihood of dumping of the product in the event of modification or withdrawn of anti dumping duties. Similarly, mere non-existence of injury to the domestic industry is insufficient. The exporter is required to establish that there is no likelihood of injury in the event of modification or withdrawn of anti dumping duties.

- b. Since the Designated Authority is required to examine the likelihood of dumping and injury in a midterm review investigations, it follows that the applicant is required to provide relevant information and evidence in this regard.
- c. In a review proceeding initiated by the Authority under Rule 23, there are three tests that are required to be considered by the Designated Authority:
- d. Identification of the specific factors which would constitute sufficient changed circumstances to warrant a review;
- e. The dumping and/or injury would be unlikely to continue or recur if the measures were removed or varied, i.e., a possibility of no injury in case of discontinuance of the anti-dumping duty needs to be established.
- f. Whether because of the existing measures the domestic industry has been able to offset injury and counteract dumping which was causing injury or the duty is no longer sufficient to counteract dumping which is causing injury.
- g. It has been claimed that normal value has declined and export price has increased. However, this does not mean that there is no dumping. It is not even claimed by the petitioner herein that (a) the product is no longer being dumped and (b) it is unlikely that the dumping would continue or recur if the duties were modified or withdrawn. Nor there is any positive evidence provided in this regard.
- h. Significant exports from Korea RP to various global markets, significant surplus capacities in the global market and fresh additions to the capacity in the foreseeable near future clearly establish existence of significant freely disbursement production capacities.
- i. The subject country is selling the subject goods to third countries at a price lower than the export price to India.

Views of the Applicant Exporter

57. Applicant exporter (M/s LG Chem) has submitted as under:

- a) They have established Phenol plant mainly to meet the captive demand for manufacture of Bisphenol-A. Only a small part of the subject goods is exported.
- b) Prices of Phenol in India as well globally are on the rise and the trend of increase after the period of investigation. After the period of investigation of the current Mid Term Review investigation, the Domestic Industry has increased the price of Phenol by more than 51%.

- c) Export price from Korea RP has also shown the same trends. During the month of Dec 2010, the FOB price from Korea RP was US\$ 2000 per MT which is almost 40% higher than the prices prevailing during the period of investigation of the current Mid-term Review investigation.

Views of other interested parties

58. Other interested parties have submitted as under:

- a) Purpose of anti-dumping measure is not to facilitate the domestic industry to create a monopoly on prices, but to eliminate the trade-distorting effects of injurious dumping and, thus, to ensure fair competition in the Indian market.
- b) Further, Domestic industry has argued on recurrence of injury and in support referred some previous findings and CESTAT decision during the hearing. Facts of this case are quite different because, in this case, (i) domestic industry is earning super/abnormal profit, (ii) Capacity of Indian producers is less than demand in India, and (iii) small scale industry is also consuming this product. Therefore, we would like to ask Authority, in this situation, can small user industries survive?
- c) In this product domestic industry is enjoying anti dumping duty benefits since long back because of imposition of Anti Dumping Duty from different countries while this is a commodity product. Domestic industry would always demand duty should continue because they want to earn super profit in the shade of ADD and do not want to play fair competition. Therefore, we request the Honorable Authority to kindly withdraw the ADD on Phenol.

Examination by the Authority

59. The Authority has called for additional information in a Supplementary Questionnaire from both the cooperating exporters for the period of investigation as well beyond the period of investigation w.r.t estimated production, domestic sales, imports into Korea RP and exports of the subject goods from Korea RP during the one year after the POI and exports to other countries during the POI to examine the issues raised by the Domestic Industry in respect of likelihood of injury as mandated under Rule 23. The Authority has noted the following:

- i. It has been found that both the responding exporters from Korea RP have created the capacities mainly to meet the internal demand of the subject goods for manufacture of Bisphenol-A. Significant portion of the total production of Phenol is captively consumed

and sold domestically by both the responding Korean producers/exporters. Remaining part is being exported to other countries including India. During the period of investigation exports to India was very limited. During the course of verification at the plant, it was noticed that LG Chem has enhanced the production capacity of Phenol Plant by about 10% after the period of investigation of the Mid-term Review. It was noted that enhancement in capacity was made to match the enhanced capacity of Bisphenol-A. It was found that the company has enhanced the capacity of Phenol due to the de-bottlenecking of certain operations and no additional plant and machinery was installed. The Authority found that enhancement in capacity by the applicant exporter was basically to meet the captive requirement.

- ii. Transaction wise details of exports of Phenol to countries other than India were also obtained by the Authority for the period of investigation. It was found that export price to some of the other countries is almost similar or above the export price to India. In the case of LG Chem, the average export price to other countries during the months of exports to India was found to be comparable with the average export price to India. Since Kumho P&B Chemicals has exported the subject goods in drum form, comparison of export price to third countries on similar basis during the corresponding period indicates that the same are comparable.
- iii. It was also found that both LG Chem and Kumho P&B Chemicals are operating at almost 100% capacity utilization.
- iv. The Authority has also examined the state of the domestic industry viz-a-viz the behaviour of the responding Korean exporters. The Authority notes that the price behaviour of the Korean exporters during the POI is not injuring the domestic industry. The Authority notes that the imports from the subject country are not undercutting the prices of the subject goods of the domestic industry.
- v. In order to examine the likelihood of dumping and injury to the domestic industry due to dumping of the subject goods from the subject country, the Authority has undertaken a monthly analysis of the volume of exports of the subject goods to India from the subject country. The Authority notes that the volume of exports from Korea RP during the period July 2010-June 2011 was 1579 MT. During the corresponding period in the previous year, i.e., from July 2009 to June 2010, the volume of exports from the subject country to India was 1595 Mt. Therefore, the Authority notes that there doesn't appear to be any significant increase in the volume of exports from the subject country post the POI, so as to cause injury to the domestic industry.
- vi. The Authority notes that the prices of Phenol in India continue to increase even after the POI. In order to examine the likelihood of injury to the domestic industry due to dumped imports in the post investigation period, the Authority has also undertaken a month wise

analysis of the cost of production, net sales realization and the profitability of the domestic industry during the period from June 2010-July 2011. The analysis reveals that during the said period, the domestic industry has consistently made profits on the sales of the subject goods. Further, the Net sales realization of the domestic industry was noted to be significantly higher than the NIP of the domestic industry for the corresponding months. Therefore, no evidence of price suppression and or depression has been noted during the Post POI period.

- vii. The Authority further analysed that assuming that if the anti dumping duty presently in force is removed because of the above mentioned reasons, leading to third country exports of the responding producer/exporters being diverted to India, what would be the impact of such diverted exports on the domestic industry. In this regard, the Authority notes that in the case of LG Chem, the landed value of such third country exports is more than the Non-injurious Price of the domestic industry. In the case of Kumho P&B Chemicals, the landed value of such third country exports is less than the Non-injurious Price of the domestic industry.
- viii. In the post POI period, the Designated Authority has also undertaken an analysis of the landed values of imports from the subject country vis-à-vis the NIP of the domestic industry. It is noted that as per the Korea Customs Website KITA, the landed values of imports from Korea RP from July 2010 to June 2011 are higher than the NIP. It was also noted that the landed values of imports were at a price significantly higher than the non-injurious price for the domestic industry. Therefore, the landed values in the post investigation period were noted to be unlikely to cause any injury to the domestic industry. In fact, the injury margin for the post POI was consistently negative.
- ix. Regarding the submission by KPB that their two transactions may be considered as representative for dumping margin determination as per the established practices and precedents of the Authority, the Authority has noted that in a Mid Term Review, likelihood of dumping and injury is important to be examined and the Authority has examined the impact of exports from KPB to India and third countries during POI and Post POI periods. The Authority also notes that the goods exported by KPB are like article to the goods manufactured by the Domestic Industry.
- x. It has been argued by the domestic industry that the subject country is selling the subject goods to third countries at a price lower than the export price to India and, therefore, in the event of revocation of the anti-dumping duties, there is likelihood of the subject country diverting their exports to India after the POI resulting in injury to the domestic industry. In this regard, the Authority has undertaken a month wise analysis of the landed values of exports to third countries from the subject country, vis-à-vis, the NIP of the domestic industry. It is noted that the average landed value of exports to third countries from Korea RP to third countries as per KITA as compared to the NIP of the domestic

industry was higher. This suggests that even assuming that some of the exports from the subject country are diverted to India, consequent to the withdrawal of the duty, they are unlikely to cause a material injury to the domestic industry.

CAUSAL LINK

60. Submissions made by the interested parties in respect of the issue of causal link have been examined. A detailed examination was made with regards to the issues pertaining to the injury to the domestic industry and causal link between the material injury to the domestic industry and dumped imports. Paragraph (v) of Annexure II of the Anti-dumping Rules reads as under:

"It must be demonstrated that the dumped imports are, through the effects of dumping, as set forth in paragraphs (ii) and (iv) above, causing injury to the domestic industry. The demonstration of a causal relationship between the dumped imports and the injury to the domestic industry shall be based on an examination of relevant evidence before the designated authority. The designated authority shall also examine any known factors other than the dumped imports which at the same time are injuring the domestic industry, and the injury caused by these other factors must not be attributed to the dumped imports. Factors which may be relevant in this respect include, inter alia, the volume and prices of imports not sold at dumping prices, contraction in demand or changes in the patterns of consumption, trade restrictive practices of and competition between the foreign and domestic producers, developments in technology and the export performance and the productivity of the domestic industry."

Comments of the Domestic Industry

61. Domestic Industry has submitted as under:

- a) It has been submitted by the Domestic Industry that given high export orientation of the Korean producers and significant present and potential surpluses in the global market, it is obvious that withdrawal of anti dumping duty shall result in significant increase in imports from Korea at prices below (i) selling price, (ii) cost of production and (iii) non injurious price of the domestic industry. The domestic industry, therefore, would be faced with a situation of significant decline in profits to the extent of financial losses in the event of withdrawal of anti dumping duties.
- b) The present investigation is required to be terminated without any modification in the quantum of anti dumping duty. In any case, no case for premature withdrawal of anti dumping duty is made out.
- c) Given the fact that current import price from Korea is unreliable, the same should be rejected for determining causal link. The current export price from Korea RP to global market and weighted average price of imports from various third countries into India should be adopted

for causal link determination. These prices being significantly below the non injurious price, it follows that withdrawal of anti dumping duty shall lead to a situation where in the domestic industry shall be forced to set at a price below non injurious price and current selling price. Thus, premature withdrawal of duty is likely to lead to injury to the domestic industry once again.

62. The Authority has examined whether other factors listed under the Anti Dumping Rules that could have contributed to injury to the domestic industry. It was found as follows

Imports from third countries.

63. Imports of subject goods from other countries are substantial.

Contraction in demand

64. The Authority notes that the demand for the subject goods has increased during the injury period. Possible contraction in demand could not have caused injury to the domestic industry.

Changes in the pattern of consumption

65. The pattern of consumption with regard to the product under consideration has not undergone any change, nor there is any quantified allegation in this regard. The investigation so far has not shown existence of alternate competing products and possible injury being caused by such alternate products.

Trade Restrictive practices of and competition between foreign and domestic producers

66. The Authority notes that there is a single market for the subject goods where dumped imports from Korea RP compete directly with the subject goods supplied by the domestic industry. It is noted that the imported subject goods and domestically produced goods are like articles and are used for similar applications/end uses. There is no evidence of trade restrictive practices of and competition between the foreign producers and domestic producers causing injury to the domestic industry.

Developments in Technology

67. There is no allegation of developments in technology, nor has the investigation so far shown that possible injury to the domestic industry could have been caused by developments in technology.

Export performance

68. The Domestic Industry does not have any export sales. However, the Authority has considered only domestic operations and domestic profitability.

Productivity of the Domestic Industry

69. There is no material change in productivity of the domestic industry. Productivity of the domestic industry in terms of labour output and daily output has shown a growth during the POI compared to the base year. It is also noted that productivity has shown a growth during the entire injury period along with growth in production and sales.

CONCLUSIONS

70. Having regard to the contentions raised, information provided and submissions made by the interested parties and facts available before the Authority as recorded in the above Findings and on the basis of the above analysis, the Authority concludes that:

- i. Though there are imports of the product under consideration at dumped prices from one of the sources from the subject country (Korea RP) during the period of investigation in this midterm review, there is no adverse impact on the domestic industry during the POI and the post POI period.
- ii. Imports of the subject goods from the subject country are not undercutting the prices of the domestic industry during the POI, and the adverse impact of the same on the volume, prices and profitability of the domestic industry is absent. Further, a month wise analysis of the cost of production, net sales realization and the profitability of the domestic industry during the POI and post POI period reveal that during the said periods, the domestic industry have consistently made profits on the sales of the subject goods. Further, the net sales realization of the domestic industry was noted to be significantly higher than the Non injurious price of the domestic industry for the corresponding months during the same periods. Therefore, no evidence of price suppression and or depression has been noted during the POI and post POI period.
- iii. With regard to determination of lasting nature of the price effect and its impact on the domestic industry during the POI and post POI for determination of likely hood of continuation or recurrence of injury, a month wise analysis of the landed values of exports to third countries from the subject country, vis-à-vis, the NIP of the domestic industry indicated that the landed value of exports of subject goods from subject country to third countries, was generally higher than the non injurious price determined for the domestic industry. This suggests that even assuming that some of the exports from the subject country are diverted to India, consequent to the withdrawal of the Anti Dumping duty, they are unlikely to cause material injury to the domestic industry.

Recommendations

71. Having concluded as above, the Authority is of the opinion that there is no need for the continued imposition of anti-dumping duty on Phenol originating in and exported from Korea RP and the same, thus, is required to be withdrawn.
72. An appeal against the order of the Central Government shall lie before the Customs, Excise and Service Tax Appellate Tribunal in accordance with the Customs Tariff Act.

VIJAYLAXMI JOSHI, Designated Authority